

भगवान हमारे देश में है



बाबूजी



PUTLI TRUST, Chennai, Tamil Nadu, India.

बाबूजी की अन्य साहित्यिक कृतियाँ

1. शिव ज्ञान बोधम - शास्त्र

यह एक शैव शास्त्र (शास्त्र - ज्ञान पर आधारित शास्त्र), शिव ज्ञान बोधम की व्याख्या है।

2. शिव पुराणम - स्तोत्रः

यह एक शैव स्तोत्र (स्थोथरा - भक्ति शास्त्र), शिव पुराणम की व्याख्या है।

3. एक बॉन यात्रा - मत्रा

यह कार्य उस दिव्यता का परीक्षण पैमाना है जो एक आम आदमी (और सभी के भीतर) में मौजूद है। मत्रा का अर्थ है 'एक परीक्षण मानक'।

4. प्रकाश की झलक - नेत्र

यह कार्य आध्यात्मिक दृष्टि या धारणा के विचारों से उभरा है। नेत्र का अर्थ है आँख।

5. इस प्रकार स्पेक इंडिया - होथरा

होथरा का अर्थ है आग से पहले किया जाने वाला धार्मिक अनुष्ठान। यह काम नाबाद सत्य की अग्नि से पहले किया जाने वाला एक उत्साही धार्मिक अनुष्ठान है।

6. भारत - सूत्रा

यह काम सरल शब्दों में भारतीय दर्शन से कुछ जटिल स्पष्टीकरण और आध्यात्मिक समीकरण रखता है। सूत्र का अर्थ है समीकरण।

7. आम आदमी के निशान - पथरा

यह काम इस बारे में है कि एक आम आदमी क्या समझ सकता है और अधिक सटीक होने के लिए दर्शन, भारतीय दर्शन पर काम कर सकता है। यह कुछ सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों के बारे में भी बात करता है।

8. जीवन की यात्रा – यात्रा

यात्रा का अर्थ है गंतव्य बिंदु वाली यात्रा। हमारा जीवन भी एक यात्रा होना चाहिए - एक विशिष्ट गंतव्य की ओर एक यात्रा। जब हम सही समझ के मील के पत्थर पार करते हैं, तो हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि हम सही रास्ते पर हैं। यह काम जीवन की ऐसी सही समझ के बारे में है।

9. मोरल टैबलेट - मिथ्रा

यह एक दोस्त की तरह है - एक सच्चा दोस्त, मूल्यवान और सरल सलाह या नैतिकता देना जो सभी मनुष्यों के लिए हमेशा के लिए उपयुक्त हो।

10. रास्ते में - गोथरा

यह लेखक की आत्मकथा है। यह भारत की सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमि के अनुरूप होगा। फिर भी, इस काम में दिखाई देने वाले सबक सभी के लिए समान हैं।

लेखक की प्रस्तावना:

देवी माँ को नमन! प्रिय गुरु को नमन!

मुझे अपना परिचय देने दो। मैं तमिलनाडु, भारत से बाबूजी हूँ। मैं मूल रूप से लेखक नहीं हूँ। लेकिन एक क्षणिक लेखक के रूप में, मुझे मूल बातें, यानी आध्यात्मिकता को छूने के लिए बनाया गया था। आइए इस किताब के मुद्दे पर आते हैं।

यह रचना ईश्वर की इच्छा के अनुसार, सभी की ईश्वरीयता को याद दिलाने के लिए, धर्म के लक्ष्य को इंगित करने के लिए, संस्कृति की महान भूमिका को उजागर करने के लिए और भारत के व्यक्तित्व को दिखाने के लिए लिखी गई है, जिसमें इन सभी को शामिल किया गया है।

इस पुस्तक का उद्देश्य सरल है। उद्देश्य की ओर ले जाने वाले मार्ग भी सरल हैं। लेकिन प्रभाव कीमती और स्थायी है।

समस्या यह है कि, हम लोग हमेशा कुछ छोटे और अस्थायी लाभ हासिल करने के लिए जटिलताओं के लिए जाते हैं। एक कहानी है: एक बार, एक ऋषि एक आध्यात्मिक गुरु से मिले और उन्हें गर्व से बताया कि उन्होंने कुछ अनोखी शक्तियों को प्राप्त करने के लिए इतने साल तपस्या में बिताए। गुरु ने ऋषि से उनके द्वारा प्राप्त विशेष शक्तियों के बारे में पूछा। साधु ने लाइव प्रदर्शन

किया। वह पास की एक धारा में चला गया और बस उस पर चला गया। वह दूसरी तरफ गया और पानी पर चलते हुए वापस आ गया। ऋषि ने गुरु से पूछा, 'क्या तुमने देखा? गुरु को उस पर दया आ गई। गुरु ने उत्तर दिया: "ओह, क्या तुमने अपनी वर्षों की लंबी तपस्या के लिए यही हासिल किया है? इसे कोई भी नाविक की मदद से सिर्फ पांच मिनट में कर सकता है।" हम भी अपने जीवन में यही काम कर रहे हैं। हम कुछ अस्थायी और क्षुद्र सुख प्राप्त करने के लिए अपना बहुमूल्य समय और प्रयास खर्च कर रहे हैं।

इस पुस्तक में जीवन में हमारे सरल लक्ष्यों को याद दिलाने की धारणा है। हालाँकि यह २००१ में ही लिखा गया था, लेकिन इसे जनता के सामने आने में काफी समय लगा। मेरी मां कहा करती थीं, 'अपना संदेश देने में जल्दबाजी न करें। आपको सही समय, सही जगह और सही दर्शकों का इंतजार करना चाहिए।' मुझे लगता है कि ये सब अब अर्जित हो गए हैं। भगवान ने मिशन सेट किया, लोगों को सेट किया और प्रदर्शन के लिए मंच तैयार किया। मेरी मां ने कहा: "यह जरूरी नहीं है कि प्रसार हमेशा एक बड़ी भीड़ के सामने हो। भगवत गीता केवल एक चौकस व्यक्ति - अर्जुन को कहा जाता है। अब गीता दुनिया के कोने-कोने में चली गई है।" मैं उन सभी को देखता हूँ जो इस पुस्तक को 'अर्जुन' के रूप में पढ़ते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि मैं मालिक हूँ। मैं भी एक अर्जुन हूँ - आप में से एक। हम सबका एक ही गुरु है - ईश्वर। जो लोग यहां मौजूद हैं, उनकी भी इस पुस्तक के संदेश को फैलाने में आपकी भूमिका है। परमेश्वर हम में से प्रत्येक को अपने तरीके से मार्गदर्शन करेगा।

मेरे गुरु श्री परमहंस योगानंद के निम्नलिखित शब्दों को उद्धृत करने का यह सही समय है:

"प्रत्येक इंसान अद्वितीय है; कोई भी दो बिल्कुल एक जैसे नहीं हो सकते। अपने बारे में इस तरह सोचें: 'मेरा व्यक्तित्व ईश्वर की देन है। मैं क्या हूँ, कोई और नहीं। मुझे अपने दिव्य व्यक्तित्व पर बहुत गर्व होगा। मैं अपने आप को सुधार कर अच्छाई का व्यक्तित्व धारण कर लूँगा।' यदि आप अपनी भूमिका अच्छी तरह से निभाते हैं, तो आप राजा या रानी की भूमिका निभाने वाली आत्मा के समान अच्छे हैं। और जब तक आप अपनी भूमिका अच्छी तरह से निभाते हैं, आप आकर्षक और सभी से प्यार करते रहेंगे। आपकी भूमिका अच्छी तरह से निभाई गई भगवान के लिए आपका पासपोर्ट है। ”

थिरुचित्रम्बलम

(परम वासी के चरण कमलों को नमस्कार)

प्रकाशक का नोट:

वह एक युवा लेखक हैं। वह बचपन से ही सच्ची आध्यात्मिकता और एक शांत सामाजिक संरचना के प्रशंसक रहे हैं। उन्होंने इस पर कई किताबें पढ़ी थीं और सत्य को इस प्रकार देखा था: 'सत्य सभी के लिए समान है; यह सभी में समान है। लेकिन, हम मानसिक रूप से इससे जितनी दूरी तय करते हैं, वह हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग होती है। इसलिए, सत्य के बारे में हजारों खुलासे हुए हैं। जब मन की दूरी कम हो जाती है और पूरी तरह से शून्य हो जाती है, तो हम महसूस करते हैं कि हम सत्य से अलग नहीं हैं। वह कहता है: 'सिद्धांतों से भ्रम पैदा नहीं होते; वे उन लोगों द्वारा बनाए गए हैं जिन्होंने सिद्धांतों को गलत तरीके से समझा।' वे सच्चे धर्मनिरपेक्षता का समर्थन करते हैं। वह श्री परमहंस योगानंद की शिक्षाओं से प्रेरित थे और उन्होंने भारत के अपने मास्टर योगदा सत्संग सोसाइटी (वाईएसएस) से दीक्षा ली।

हालाँकि उन्होंने दस से अधिक पुस्तकें लिखी थीं, लेकिन वह जिसका प्रचार करना चाहते हैं और अन्य भाषाओं में अनुवाद करना चाहते हैं, वह है 'ईश्वर हमारी भूमि में है'। शीर्षक में 'भूमि' शब्द, किसी भी भौगोलिक क्षेत्र को संदर्भित नहीं करता है; यह प्रत्येक प्राणी के सहज आंतरिक स्थान को संदर्भित करता है। वाई एस एस के स्वामी अमरानंद गिरि ने सितम्बर १९, २०१७ को सोलन, हिमाचल प्रदेश में वाई एस एस के शताब्दी समारोह के दौरान आयोजित एक वाई एस एस बैठक में इस पुस्तक को अपनी गोद में रखा था। लेखक इस घटना को अपने गुरु का आशीर्वाद मानते हैं और सर्वोच्च मान्यता के रूप में मानते हैं कि यह किताब कभी भी इस धरती पर मिल सकती है।

उन्होंने स्वयं इस पुस्तक का अनुवाद अपनी मातृभाषा तमिल में किया था। वर्ष २०१८ में कंबोडिया में आयोजित विश्व तमिल सम्मेलन में इस पुस्तक का विमोचन हुआ। बाद में, उन्होंने इस कार्य का अन्य भाषाओं जैसे चीनी, स्पेनिश, फ्रेंच आदि में अनुवाद करवाया।

उनके पास 'भगवान हमारी भूमि में है' कार्य को फैलाने के लिए पुतली नाम से एक ट्रस्ट संगठन भी है। वह ट्रस्ट नाम का विस्तार इस प्रकार करता है: 'पी' पवित्रता के लिए है; 'यू' एकता के लिए खड़ा है; 'टी' सत्यता के लिए खड़ा है; 'एल' प्यार के लिए खड़ा है; 'मैं' का अर्थ है 'मैं' का आत्मनिरीक्षण।

वे कहते हैं: 'जब मन में पवित्रता स्थापित हो जाती है, तो यह विचारों, शब्दों और कार्यों की एकता में परिणत होता है। इस सामंजस्य को सत्यता के रूप में जाना जाता है। जब इसे सभी के कल्याण पर लागू किया जाता है, तो हम इसे प्रेम कहते हैं। यह प्रेम (जो पवित्रता, एकता और सत्यता पर आधारित है) किसी की चेतना को सीमित शरीर से बंधे अहंकार से सर्वव्यापी 'मैं' में बदल देता है।

उन्होंने बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में मास्टर्स किया था। वह चेन्नई पोएट्स सर्कल के सदस्य हैं। वह एक पारिवारिक व्यक्ति हैं; एक साधारण प्राणी। वह वह है जो 'अपना कर्तव्य करो और परिणामों के लिए पीछे या आगे मत देखो' सिद्धांत को निष्पादित करने का प्रयास कर रहा है। लेकिन उसकी भी कुछ ख्वाहिशें हैं। वह एक 'घोटालों और गालियों से मुक्त' राष्ट्र को एकता, अखंड संस्कृति और अछूत प्रकृति से भरा देखना चाहता है; वह उपरोक्त को पूरी दुनिया में देखना चाहता है। वह चाहते हैं कि भारत विश्व शांति को बनाए रखने और उसका आनंद लेने में दुनिया के लिए एक आदर्श के रूप में कार्य करे। अपने

धर्म का सही और सही ढंग से अभ्यास करने से, मन की शुद्धि प्राप्त होती है और इस प्रकार भाषाई, सांप्रदायिक और धार्मिक मतभेदों के बावजूद सभी आत्माओं के भाईचारे का एहसास होता है।

उनका दृढ़ विश्वास है कि भाईचारे और प्रेम की इस सामान्य भावना के माध्यम से व्यक्ति स्वयं में अटूट शांति प्राप्त कर सकता है और सार्वभौमिक शांति को भी प्रोत्साहित कर सकता है। उनकी पुस्तकें केवल इसी संदर्भ में दो दशकों की अवधि में विभिन्न आयामों और गहराई में लिखी गई हैं। सामान्य नैतिकता का संक्षिप्त संस्करण जिसे वे 'नैतिक टैबलेट' कहते हैं, व्यक्तियों की शांति की प्राप्ति के माध्यम से सार्वभौमिक शांति का समर्थन करने का प्रयास करता है। उनके पास एक वेब साइट (<http://putli.live>) है जो 'भगवान हमारी भूमि में है' और कई भाषाओं में नैतिक टैबलेट के संदेश को फैलाने के लिए है।

अंतर्वस्तु

थिरुवन्नमलाई	12
एक आधारभूत कार्य	15
शास्त्रों में भगवान	20
भगवान हमारे देश में है	25
इंसान में भगवान	29
मंदिरों	35
धर्मों का उद्देश्य	42
उसे कैसे देखें	51
भारत और संदेश	55

थिरुवन्नमलाई

(जनवरी १२, २००१ - १५ जनवरी, २००१):

मुझे इस वर्ष तिरुवन्नामलाई जाने की तीव्र इच्छा हुई। मैं अभी-अभी एक भयानक वायरल बुखार और कुछ मानसिक आघात से उबरी थी।

मैंने १२ वीं के बाद के घंटों में दर्शन (मंदिर में देवता को देखना) किया था। अगले दिन सुबह मैं बाघवन रामनाश्रम गया। बाघवन रमण एक महान आत्मा थे जिन्होंने स्वयं पर अपने तार्किक और जोरदार निरंतर ध्यान प्रश्नों के माध्यम से भगवान के निकट थे। यहां हम दुनिया के कोने-कोने से बहुत से विदेशियों, सत्य के सच्चे साधकों को देख सकते हैं। फिर मैं पहाड़ पर घूमने लगा। इसे गिरि वलम कहते हैं। यह लगभग १४ किमी. और एक चक्कर पूरा करने में लगभग ५ घंटे लगते हैं। अगले दिन पोंगल था - सूर्य को धन्यवाद देने वाला त्योहार। पोंगल के दिन, मुझे ट्रेकिंग का कुछ अनुभव हुआ। शीर्ष के रास्ते में, मुझे एक युवा संत और पहाड़ में पोंगल मनाने वाले लोगों के एक समूह से चक्कराई पोंगल (चीनी जी चावल - दिन की वस्तु) मिला। संत ने मुझे अगले दिन रुकने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि अगले दिन एक महत्वपूर्ण त्योहार होने जा रहा है। खास बात यह है कि इस पर्व में शामिल होने वालों को जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिलती है।

अधिकांश तीर्थयात्रियों को अंतर्ज्ञान या आदेश द्वारा इस स्थान पर लाया जाता है। उनमें से कुछ इस स्थान को अपना स्थायी निवास बनाते हैं। हाल के दिनों में से कुछ का नाम लेने के लिए- बगावन रमण, शेषाद्री स्वामिगल और योगी

रामसूरथ कुमार। हमें एक शाश्वत श्रेष्ठ व्यक्ति की याद दिलाने के लिए यहां कई चमत्कार होते हैं।

इस विशेष पर्वत को रहस्यमय कहा जाता है। यह पर्वत महान हिमालय से भी पुराना (२०० करोड़ वर्ष से अधिक) साबित होता है और इसमें कई अज्ञात रहस्य हैं। वास्तव में जनवरी १९४९ में दिल्ली में आयोजित भारतीय विज्ञान परिषद में इस आशय का एक मामला उठाया गया था कि तिरुवन्नामलाई दुनिया का सबसे पुराना पर्वत है। यह पाया गया है कि यह पर्वत एक समय में एक जलती हुई आग थी।

यहां का मंदिर ब्रह्मांड के अग्नि तत्व का प्रतिनिधित्व कर रहा है। इसी तरह हमारे पास प्रकृति के अन्य चार प्रमुख तत्वों जैसे अंतरिक्ष, वायु, जल और पृथ्वी के लिए अन्य पारिस्थितिक या पर्यावरणीय मंदिर हैं। यह हिंदुओं की मान्यता है - बल्कि दुनिया की मान्यता है, क्योंकि दुनिया भर के सभी लोग यहां आते हैं और पहाड़ और मंदिर की पूजा करते हैं। कार्तिगई के महीने में एक विशेष अवसर पर, पहाड़ की चोटी पर एक भीषण आग लगा दी जाती है। यह यहां के सबसे प्रसिद्ध त्योहारों में से एक है जिसमें देश भर से लाखों लोग इकट्ठा होते हैं। संत की सलाह के अनुसार मैंने अपना प्रवास एक और दिन के लिए बढ़ा दिया, मैंने अपना समय मंदिर के अंदर बिताने का फैसला किया। पिछले दिनों की अपेक्षा इस बार भीड़ अधिक रही। मैं सुबह ३ बजे तक आसमान के नीचे सोया। विशेष पूजा अर्चना तड़के करीब तीन बजे शुरू हुई और सुबह आठ बजे तक चली। जो मौजूद हैं, वे ही इसे महसूस कर सकते हैं। यह शब्दों से परे था। हालांकि भीड़ भारी थी, लेकिन सभी की मौजूदगी सभी को पसंद आई।

यह वह दिन है जब स्वामी अंबाल और उनकी भक्त सुंदरा के साथ तिरुवन्नामलाई की सड़कों से गुजरते हैं। नृत्य करने वाली मूर्तियों के चेहरे में परमानंद (वास्तव में वे नृत्य करते थे जो उन्हें नृत्य करते थे और यह एक राजसी नृत्य है!), अतुलनीय वेशभूषा, ड्रम, तुरही, ब्रह्मा थालम (एक प्रकार की झांझ - बड़ी धातु की प्लेटें) वह दे - 'चिंग.. चिंग' ध्वनि) सभी को परमानंद में रखा। फिर, लगभग 9 बजे, मैं बाहर आया और अपनी वापसी की यात्रा शुरू की। मेरा असली ब्रेक था। मैंने अपना नाश्ता एक बहुत छोटी चाय की दुकान में किया था - यह वास्तव में एक झोपड़ी थी। वहाँ मैंने उसकी दीवार के एक ओर जलप्रपात का एक अद्भुत चित्र देखा, जिसमें निम्नलिखित शब्द थे:

"यह समाचार फैलाओ कि ईश्वर हमारे देश में है।"

भगवान हमारे देश में है

- एक जमीनी कार्य

मेरे घर पहुंचने तक और उसके बाद भी यह बजता रहा। "यह समाचार फैलाओ कि ईश्वर हमारे देश में है।" ऐसा लग रहा था कि यह मेरे लिए ही था - जलप्रपात संदेश के बाद उत्साही विशेष अवसर ने मुझे शब्दों के अधिक अर्थ लेने के लिए प्रेरित किया। यह मेरे लिए महत्वपूर्ण लग रहा था। पर मैं बिलकुल खाली था। मैं कोई प्रबुद्ध व्यक्ति नहीं हूँ। मैं एक साधारण आदमी हूँ। मैं यह कैसे करने जा रहा हूँ? मुझे ऐसा क्यों करना चाहिए ? मुझे नहीं पता था कि कैसे आगे बढ़ना है। मेरी स्वास्थ्य की स्थिति और भ्रमित मन की स्थिति ने मुझे आगे कोई कदम उठाने से रोका। यह एक चेक मेट था, मैं किसी भी तरफ नहीं जा सकता था! मजबूर होकर मुझे घर में बैठना पड़ा। तब मुझे एहसास हुआ कि मैं इस आवाज का जवाब दिए बिना कुछ नहीं कर सकता। यह फिर से बजने लगा। हालांकि मेरे पास कोई बुनियादी ढांचा नहीं था, फिर भी मैंने इसे जारी रखा।

यह सही नहीं होगा, अगर मैं कहूँ कि मैं भगवान के बारे में कुछ नहीं जानता। हर कोई, जिसमें वे लोग भी शामिल हैं जो कहते हैं कि 'ईश्वर नहीं है', ईश्वर के बारे में कोई न कोई विचार या अनुभव है - सकारात्मक या अन्यथा। इसलिए, मैंने पूरे दिल से कोशिश करने का फैसला किया। यहां, मैं इसके बारे में हमारे शास्त्रों, आध्यात्मिक गुरुओं और तिरुवन्नामलाई में दिए गए विश्वास की मदद से बोल रहा हूँ।

शास्त्र कहते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापी है। ईश्वर किसी भौगोलिक क्षेत्र से विवश नहीं है। यदि कोई कहता है कि ईश्वर केवल एक विशेष क्षेत्र में निवास करता है,

तो यह सच नहीं हो सकता। यहाँ यह ईशा उपनिषद के एक वाक्यांश को उद्धृत करने का विकल्प है। "सारा ब्रह्मांड भगवान का है: वह इसके हर छोटे से हिस्से में रहता है।" इसलिए, 'हमारी भूमि' शब्द किसी एक राष्ट्र को संदर्भित नहीं करता है। यह पूरी सृष्टि को संदर्भित करता है।

फिर भी, इतिहास के अनुसार, भारत आध्यात्मिकता के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ इतना खास क्या है? भगवान और मोक्ष जैसे शब्द अत्यधिक व्यक्तिगत हैं। "जो विश्वास करते हैं, उनके लिए स्पष्टीकरण की कोई आवश्यकता नहीं है। जो विश्वास नहीं करते हैं, उनके लिए कोई स्पष्टीकरण नहीं है"।

मैंने भारत के कुछ चुनिंदा आध्यात्मिक स्थानों पर जाने की योजना बनाई। मैंने सोचा कि मैं पर्यटन उद्योग में पेश किए गए कुछ टूर पैकेज के माध्यम से ऐसा कर सकता हूँ।

मैं २० फरवरी को एक बार फिर जात व्यक्तियों के साथ तिरुवन्नामलाई गया। हमने कई स्थानों का दौरा किया और शिव राठरी की रात के लिए मंदिर परिसर के अंदर रुके। इस बार, मुझे मंदिर परिसर के अंदर चित्रित एक तमिल कविता से एक सबक मिला। इसने कहा: "आपका हृदय ही मंदिर है। जब आप सभी अपराधी इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं, तो आप वहाँ भगवान को देख सकते हैं।" इसका तात्पर्य है कि ईश्वर सभी में निवास करता है। सब भगवान की भूमि है!

मैं आत्मविश्वास से भरी दिख रही थी क्योंकि मुझे शुरुआत करने के लिए कुछ दिया गया था!

कुछ दिनों के बाद मैं अपने घर में ऊपर गया और खुली छत पर लेट गया और आसमान की ओर देख रहा था।

शाम के समय जब मैं खाली होता हूँ तो यही करता हूँ। मैं नीले आकाश को देखता और देखता कि यह गहरा होता जा रहा है। एक तारा ऊपरी पश्चिम की ओर से अपना सिर उठाएगा। ठीक ऊपर, हमारे पास एक और सितारा है। फिर मैं तीसरे को देखने के लिए अपना सिर पीछे झुकाता हूँ। यह एक शांत समुद्र की तरह दिखाई देगा, जिसमें रात के लिए दूर-दूर के जहाज यहां रोशनी कर रहे हों। हवा खुशी जोड़ती है। ईश्वर क्या है? हमारी जमीन क्या है ? मैंने सतह से परिभाषाओं को ध्यान से टाला।

निरंतरता। कोई उतार-चढ़ाव नहीं। कोई डगमगाता नहीं। अनंतकाल। जो कुछ भी शाश्वत है उसे ईश्वर या ईश्वरीय गुण वाला कहा जाता है। यह भगवान के लिए आम आदमी की परिभाषा है। ईश्वर का अर्थ है अमर, अनंत। मैं यहां सामग्री का जिक्र नहीं कर रहा हूँ। क्योंकि सूर्य और तारों सहित कोई भी पदार्थ शाश्वत नहीं है। वैज्ञानिक गणना के अनुसार, वे सभी किसी न किसी दिन गायब होने वाले हैं या पहले ही गायब हो गए हैं। अनंत काल भौगोलिक और समय की सीमाओं से बाहर खड़ा है। तो, 'हमारी भूमि' एक सहज अवधारणा बन जाती है जिसमें सब कुछ शामिल हो सकता है। यह अब हमारे संदेश में किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र को संदर्भित नहीं करता है। यदि ऐसा होता है, तो संदेश पक्षपाती हो जाता है। अब, हमें 'भगवान' और 'हमारी भूमि' मिल गई है। हमारे भीतर

अनंत काल। इस अनंत काल को सत्य (सत्य - सदा विद्यमान) के रूप में जाना जाता है।

जब हम अनंत काल के बारे में बात करते हैं, तो इसे किसी अपरिपक्व मानव की किसी अन्य गुणवत्ता या भावना से नहीं जोड़ा जा सकता है - वे बदलते हैं, इसलिए सभी समावेशी लेकिन अभी भी अछूते अनंत काल के साथ नहीं देखा जा सकता है। अनंत काल ही गुण है - अनंत काल जो बना रहा, रहता है और जारी रहता है चाहे कुछ भी हो। ईश्वर के इस गुण की पुष्टि मैंने शास्त्रों से की है। भगवान के अन्य गुण, जैसा कि शास्त्रों में दिया गया है: आनंदमय, प्रेम और ज्ञान का अवतार, एक, शुद्ध, स्थिर, द्वैत से परे, तीन गुणों से परे (तीन मानसिक लक्षण: सत्व-पुण्य, आंतरिक, राजस-साहसी, अधिक चिंताएं) समाज और थमस के बारे में- भौतिकवादी, सहज)।

शास्त्र भी कहते हैं कि ईश्वर नित्य नवीन है। हालांकि, वह स्थिर है, परिवर्तनहीन है - वह हमेशा नया है। वह इस अर्थ में नित्य नया है, वह समय के शिखर से बंधा हुआ है। वह समय, स्थान और पदार्थ से ऊपर है। वह सर्व-समावेशी है और वह अपनी सृष्टि के सभी कणों में व्याप्त है। वह एक है और प्रत्येक प्राणी के लिए समान है। आप उसे जिस भी नाम से चाहें पुकारें - वह एक ही है, शाश्वत है।

इस परिभाषा ने मुझे अपनी यात्रा योजनाओं को रद्द कर दिया। मैंने 'भगवान हमारी भूमि में है' संदेश फैलाने के साधन खोजने के लिए बाहर की बजाय अंदर की यात्रा करने का फैसला किया। लेकिन एक बात मुझे आपको बतानी चाहिए। बेशक, एक पवित्र स्थान पर जाने के बाद ही मुझे विचार करने का संदेश मिला।

यह भूमि - भारत - इसलिए विशेष है क्योंकि, यहाँ, निरंतरता या ईश्वर को एक परिचित, सरल अस्तित्व के रूप में महसूस किया जाता है - न कि एक अज्ञात, जटिल अवधारणा के रूप में, आकाश से बहुत ऊपर। बहुमत के लिए, भगवान जीवन का एक हिस्सा है। ईश्वर की खोज भारत का वंशानुगत गुण रहा है। भारत में किसी भी समय कम से कम एक सच्चे ईश्वर के होने का एहसास है। यहां तक कि जिन लोगों को इसकी जानकारी नहीं है, वे भी इस देश की विशेषता से प्रभावित हैं। ये है भारत की खास बात। इसलिए योगानंदजी ने संयुक्त राज्य अमेरिका में निम्नलिखित शब्दों के साथ अपनी भौतिक आंखें बंद कर लीं: "जहां गंगा ... हिमालय की गुफाएं और पुरुष भगवान का सपना देखते हैं, मैं पवित्र हूं, मेरे शरीर ने उस वतन को छुआ।"

शास्त्रों में भगवान

मंदिर परिसर के अंदर हमने जो कविता देखी, उसकी पटकथा थिरूमूलर ने लिखी थी, जो १८ सिद्धियों में से एक हैं। सिद्धियां वे हैं जिन्होंने सिद्धियों को अर्जित किया था। कहा जाता है कि जिसने अपनी देह बद्ध चेतना को जीत लिया था, उसे सिद्धि प्राप्त हुई है। ऐसे व्यक्तियों में पानी पर चलने, हवा में तैरने, अपने आप को किसी भी आकार में बड़ा करने, अपने आप को शून्य करने जैसी शक्तियाँ भी होती हैं। लेकिन उन्होंने अपनी शक्तियों का इस्तेमाल लोगों को दैवीय चेतना में जगाने के लिए किया। वे बहुत सरल थे और भोजन, आश्रय, पोशाक और यहां तक कि अपने नाम की भी परवाह नहीं करते थे! कहा जाता है कि सिद्धर कहीं भी किसी भी रूप में खुद को प्रकट करने की शक्ति रखते हैं। उन्होंने गहरे रहस्यमय अर्थ के साथ कविताओं का प्रतिपादन किया जो शायद ही कुछ लोग समझ सकते हैं। ये सभी कविताएँ इस बात की पुष्टि करती हैं कि ईश्वर हम में से प्रत्येक में है।

वे हमें प्रोत्साहित करते हैं कि हम उसे अपने अंदर महसूस करें, उसे अंदर खोजने के लिए कड़ी मेहनत करें।

एक कहानी है। एक आध्यात्मिक गुरु अपने कुछ छात्रों को आत्म-साक्षात्कार पर उन्नत प्रशिक्षण के लिए चुन रहा था। उन दिनों, छात्रों को मास्टर्स द्वारा अपने तरीके से चुना जाता था और केवल सफल छात्रों को ही अगले स्तर पर पदोन्नत किया जाता था। उन्होंने दो छात्रों को बुलाया। उसने सभी को एक-एक आम दिया और बिना किसी को बताए किसी गुप्त स्थान पर जाकर आम खाने को कहा। पहला आश्रम से बाहर आया और उसे एक कोने पर एक खाई मिली। वह

उसमें कूद गया और इधर-उधर देखने लगा। जब उन्हें यकीन हो गया कि कोई उन्हें नहीं देख रहा है, तो उन्होंने एक मिनट में आम खत्म कर दिया। फिर वह विजयी होकर ऊपर चढ़ गया और गुरु के पास पहुंचा और कहा, "गुरु देव, मैंने आम को ऐसी जगह खा लिया जहां कोई मुझे नोटिस नहीं कर सकता था।" मास्टर उसकी ओर देखकर मुस्कराए और कुछ नहीं कहा। दूसरा आश्रम से बाहर आया और एकांत स्थान की तलाश में था। वह नहीं कर सका। वह भीतर के जंगल में भाग गया। वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया और विश्वास करने की कोशिश की कि वहां कोई नहीं है। लेकिन उसे यकीन नहीं हो रहा था। पेड़ और अन्य जीव उसे किसी भी तरह से देख रहे थे। उन्होंने और आगे जाने का फैसला किया। कुछ देर बाद वह एक ऐसी जगह पहुंचा जहां पेड़ नहीं थे। उसे वहां किसी जीवित प्राणी का नामोनिशान भी नहीं मिला। वह आम को अपने मुँह के पास ले गया। "रुको! कोई आपको देख रहा है!" अंदर एक आवाज ने कहा। उसने आसमान की ओर देखा और सूरज उसे देख कर मुस्करा रहा था। उसने आम को छिपा दिया और जंगल के सबसे भीतरी स्थान में घुस गया। वहाँ वह एक गुफा में जाकर बस गया। अँधेरा भरा था; वह अपने शरीर को भी नहीं देख सकता था। उसने आम निकाला और पहले काटने के लिए खुद को तैयार किया। "अरे, मैं यहाँ हूँ, क्या तुम मेरी बात नहीं सुन सकते?" वह अब ऐसी जगह खोजने की उम्मीद नहीं कर सकता था जहाँ कोई मौजूद न हो। वह वापस अपने स्वामी के पास दौड़ा और उनके चरणों में गिर पड़ा। "मास्टर, मैंने एक ऐसी जगह खोजने की कोशिश की जहां कोई मुझे नोटिस न कर सके। लेकिन मैं नहीं कर सका। मैं जहां भी जाता हूँ, मुझे लगता है कि मेरा लगातार कोई ऐसा व्यक्ति पीछा कर रहा है जो मेरे बहुत करीब है।" गुरु ने इस छात्र की ओर मुस्कराते हुए कहा, "आप चुन लिए गए हैं।" ईश्वर में आस्था रखने वाले को लगता है कि सर्वव्यापी उस पर लगातार नजर रख रहा है। उसके लिए, वह हर जगह है।

शास्त्र कहते हैं:

भौतिक ब्रह्मांड पांच मूल तत्वों से बना है। अंतरिक्ष, अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी। मानव भौतिक शरीर भी उन्हीं पांच तत्वों से बना है: अंतरिक्ष (शून्यता), अग्नि (शरीर की गर्मी), वायु (शरीर में वायु), जल (रक्त और अन्य ग्रंथियां) और पृथ्वी (मांस और हड्डियां)। ये तत्व अन्य सूक्ष्म भागों के साथ विचार शक्ति द्वारा शासित होते हैं। ये सभी आत्मा द्वारा सक्रिय होते हैं। यह आत्मा ही है जो इन तत्वों को अंदर और बाहर संचालित करती है। इस आत्मा के कारण ही हम शरीर और संसार को महसूस करते हैं। अगर यह नहीं है, तो कोई शरीर नहीं है, कोई दुनिया भी नहीं है। आत्मा को नाम और रूप के बिना सर्वव्यापी, शाश्वत और स्थिर कहा जाता है। वेद कहते हैं कि यह आत्मा ही ईश्वर है। यह आत्मा अपनी आनंदमय और शांतिपूर्ण स्थिति में हमेशा सचेत रहती है। हमारा अंतिम लक्ष्य इस आत्मा को महसूस करना है। जब तक हम यह नहीं पाते हैं, तब तक हम अपने पिछले प्रदर्शन के आधार पर जन्म और मृत्यु का अनुभव करने वाले खतरनाक जन्म और मृत्यु चक्र में हैं। चूँकि यह वही आत्मा है जो आपको और मुझ पर शासन करती है, मैं आप में दर्द महसूस कर सकता था और जब आप खुश होते थे तो मुस्कुरा सकते थे। अगर यह दूसरी तरफ है, तो इसका मतलब है कि मैं अपने चारों ओर दीवार बना रहा हूँ, इसका मतलब है कि मैं भगवान से दूर जा रहा हूँ। इस तरह, बाहरी दुनिया और आंतरिक दुनिया जुड़े हुए हैं।

यही कारण है कि उपनिषद् कहते हैं, "हिंदू तब पीड़ित होता है जब उसके आस-पास के जीवन पीड़ित होते हैं। (हिमसायं थूयाथे यासा साः हिंदुरी थ्यबिथेयथे)"

अद्वैतवादियों के अनुसार, आत्मा (आत्मा) और परमात्मा (भगवान) एक ही हैं। आत्मा उन सभी 'विशेषताओं' को ग्रहण करता है जो परमात्मा के पास हैं। इसे साकार करने की प्रक्रिया ही मानव जीवन का मूल उद्देश्य है। "आत्मा अपने स्वभाव से, सूर्य की तरह तेज है। लोग कहते हैं कि वे आत्मा या उसके तेज को देखते हैं। लेकिन, इसे कोई देख नहीं रहा है। चूंकि इसका कोई दूसरा नहीं है, इसके बाहर कुछ भी नहीं है। यह है न तो देखा और न ही देख सकता है। इसमें दृष्टि या गंध के अंग नहीं हैं और न ही इसका कोई हिस्सा है, जो समन्वयित होने पर कोई कार्य कर सकता है"। यह पाठ बृहदारण्यकोपनिषद् में दिया गया है।

हम कई ऐसे लोगों को देख सकते हैं जो वैदिक और अन्य दार्शनिक शब्दों से अनजान हैं, लेकिन फिर भी सभी को खुले दिल से प्यार करते हैं। शास्त्रों के अनुसार, वे उन लोगों की तुलना में शाश्वत शांति के अधिक करीब हैं जो शास्त्रों में सब कुछ होंठों से जानते हैं और अभी भी विनम्रता और पवित्रता की कमी है। नम्रता के बिना ज्ञान अहंकार की लोहे की दीवार बनाता है - भगवान के मार्ग में सबसे बड़ा दुश्मन।

हमारे भीतर एक अशांत शांति है जो किसी भी उतार-चढ़ाव से परे है। जैसे युद्ध, प्रदूषण और हिंसा ब्रह्मांड की शांति को भंग करते हैं, वैसे ही हमारा भौतिकवादी अहंकार, वासना और ईर्ष्या आंतरिक शांति को नष्ट कर देती है। धार्मिक संघ बाहरी शांति और आंतरिक शांति दोनों के लिए काम कर रहे हैं। कोई भी सामाजिक सुधार, कोई भी विकास जो दोनों पर ध्यान केंद्रित नहीं करता है, अपने उद्देश्य को पूर्ण रूप से पूरा करने में विफल रहेगा। मनुष्य का जीवन अस्थिर है। कोई हमेशा खुश या दुखी नहीं रह सकता। उपनिषद् कहते हैं कि

मनुष्य का अंतिम लक्ष्य सभी द्वैत से बचना और शाश्वत शांति / आनंद की स्थिति तक पहुंचना है। जब तक हमें अपने भीतर शांति का मंदिर नहीं मिल जाता है - अपनी भूमि के भीतर, हमें यात्रा में - जीवन के बाद जीवन में चलते रहना है।

भगवान हमारे देश में है

कुछ वर्षों के बाद, मैंने इस वाक्यांश के लेखक के नाम के साथ संदेश फिर से देखा। बाद में मुझे वेब से पूरी कविता इस प्रकार मिली।

"और वे जानेंगे कि हम अपने प्यार से, अपने प्यार से ईसाई हैं,

हाँ, वे जानेंगे कि हम अपने प्रेम से ईसाई हैं।

हम एक दूसरे के साथ चलेंगे, हम हाथ में हाथ डाले चलेंगे,

हम एक दूसरे के साथ चलेंगे, हम हाथ में हाथ डाले चलेंगे,

और हम सब मिलकर यह समाचार फैलाएंगे कि परमेश्वर हमारे देश में है।”

— पीटर शोल्ट्स

जब पीटर स्कोल्ट्स ने अपने समाज को यह समाचार फैलाने के लिए आमंत्रित किया कि 'ईश्वर हमारी भूमि में है', तो वह वास्तव में लोगों के बीच प्रेम और भक्ति का संचार करना चाहता था। उन्होंने ईश्वर के रूप में किसी विशिष्ट व्यक्तित्व की उपस्थिति को स्वीकार करने का प्रयास नहीं किया। वह एक आदर्श ईसाई को परिभाषित करने का भी प्रयास करता है। ईसाई वह है जो हृदय में प्रेम से भरा है।

छंदों को देखने के बाद, अगले दिन, मैं अपनी माँ के आदेश के अनुसार चेन्नई के श्री कबालीस्वरार मंदिर गया और वहाँ (तमिल में) यह जोरदार जप सुना।

"दक्षिण देश के यहोवा की जय हो - सब देशों के यहोवा की जय हो"

पीटर स्कोल्ट्स ने इसे २०वीं सदी में कहा था। यहाँ भारतीय प्रायद्वीप में तमिल शैव द्रष्टा मानिका वासागर ने तीसरी शताब्दी में ऐसा ही कुछ कहा था। उन्होंने प्रामाणिक रूप से कहा कि भगवान दक्षिण की भूमि में हैं।

मानिका वासागर (२८५ ई. - ३१७ ई.) के बारे में बहुत कम: उनके भक्ति भजन, जिन्हें सामूहिक रूप से तिरुवसागम के नाम से जाना जाता है, परम समर्पण का प्रतिबिंब हैं। उन्होंने जिस तरह से इस दुनिया को 'अलविदा' कहा था वह एक रहस्य था। वह चिदंबरम के मंदिर में गायब हो गया। हमारे पास भारत के इतिहास में कुछ अन्य भक्त हैं जिन्होंने अपने भौतिक शरीर को इस तरह से भंग कर दिया - रहस्यमय तरीके से।

वाक्यांश को लौटें। इसका गहरा अर्थ मिला है। सामान्य अर्थ है: शिव, भगवान दक्षिण की भूमि में निवास करते हैं। दक्षिण देश में भगवान शिव भक्ति के केंद्र के रूप में विराजमान हैं। दक्षिण की भूमि में उनके चमत्कारों को तिरुविलयदल पुराणम में समझाया गया है। यहां के शिव मंदिर अनगिनत हैं और भव्य मूर्तियों और अनुष्ठानों के साथ प्राचीन काल से भगवान की कृपा, सर्वोच्चता और महिमा को दर्शाते हैं और आज तक खड़े हैं। जो लोग यहां भक्ति के साथ आते हैं वे भगवान की उपस्थिति का अनुभव करते हैं। इसे महसूस करने वालों ने कहा, 'दक्षिण की भूमि के भगवान शिव की जय हो'। वे यह भी जानते हैं कि भगवान को किसी विशेष इलाके और विशेषता के लिए नियत नहीं किया जा सकता है। उन्होंने आगे कहा, 'सब देशों के यहोवा की जय हो'। जो लोग भगवान

की भक्ति से धन्य हैं, वे उन्हें हर जगह देखते हैं - दक्षिण, उत्तर, पूर्व, पश्चिम और चारों ओर। यह सामान्य अर्थ है कि हर कोई छंद से निकला है।

एक और रहस्यमय अर्थ भी है। मानव सूक्ष्म शरीर के अनुकंपा केंद्र में मूलाधार चक्र को दक्षिणी ध्रुव कहा जाता है। उत्तरी ध्रुव आज्ञा चक्र होने के कारण माथे में है। मूलाधार चक्र को प्रत्येक की दिव्य ऊर्जा का निवास स्थान कहा जाता है। आध्यात्मिक आकांक्षाओं से यह सुषुम्ना नाड़ी (रीढ़ की केंद्रीय सूक्ष्म तंत्रिका जिसके दोनों ओर एडा और पिंगला सूक्ष्म तंत्रिकाएं हैं) के माध्यम से माथे चक्र (जिसे 'तीसरी आंख' के रूप में जाना जाता है) तक ऊपर उठता है और कुंडलिनी के रूप में पहचाना जाता है। सूक्ष्म केंद्रों (और निश्चित रूप से धर्मों में) में केवल नाम भिन्न होता है। ईश्वरीय ऊर्जा एक ही है। सबकी भक्ति का प्रारंभिक स्थान मूलाधार है- 'दक्षिण की भूमि'। फिर भी, दिव्यता हर जगह फैली हुई है। यहाँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्पष्टीकरण: हम इस देवत्व को 'शामिल' नहीं करते हैं। हम इस सर्वव्यापी देवत्व से बस 'जुड़े' हैं - इस तरह। इसलिए यह कहा गया है कि 'दक्षिण देश के यहोवा की जय हो - सब देशों के यहोवा की जय हो'। आस्तिक और नास्तिक और सभी वर्गों के लोगों के लिए दिव्य ऊर्जा सभी की 'दक्षिण' भूमि में समान रूप से निहित है। बहुतों के लिए यह सुप्त रहता है, कुछ के लिए यह जागता है, बहुत कम के लिए यह 'उत्तर' की ओर जाता है। सभी के लिए, सभी मतभेदों के बावजूद, दिव्य ऊर्जा 'दक्षिण' यानी मूलाधार में मौजूद है। इसलिए इसे जोर देकर कहा गया है 'दक्षिण भूमि के स्वामी की जय हो'।

मूलाधार में, भगवान को पासु पथी के रूप में जाना जाता है, जिसका अर्थ है जानवरों का भगवान। आज्ञा में (भौंहों के बीच) शिव लिंग के रूप में (प्रकाश के स्तंभ के रूप में) और सहस्रार (सिर का मुकुट) में आदियानाधि - अनंत के रूप

में। यह वही ऊर्जा है जो चेतन स्तर के अनुसार विभिन्न नाम और रूप धारण करती है क्योंकि अनुभूति के स्तरों में सभी समान नहीं होते हैं। यह वही हवा है जो अपने रूप और गति के आधार पर बवंडर, तूफान और हवा के रूप में विभिन्न नामों को प्राप्त करती है।

संदेश 'ईश्वर हमारी भूमि में है' का शाब्दिक अर्थ उस ईश्वरीयता को दर्शाता है जो हम में से प्रत्येक में निवास करती है। महा मंत्र 'अहं ब्रह्मास्मि - स्वयं अनंत वास्तविकता है' (ब्रह्दारण्यक उपनिषद्) इस संदेश को मान्य करता है। जो लोग ईश्वर को अपने अंदर महसूस करते हैं, वे स्वयं ईश्वर के अवतार हैं। ऐसे प्राणी हमेशा इस देश के किसी न किसी हिस्से में हर समय रहते हैं।

इंसान में भगवान

"आत्मा जाग्रत अवस्था (जकरत) में आँखों में सक्रिय है। स्वप्न अवस्था (स्वप्न) में यह कंठ में सक्रिय होती है। यह गहरी नींद की अवस्था (सुशुब्ती) के दौरान हृदय में सक्रिय होता है। यह सुप्त समाधि (थुरिया) की अवस्था के दौरान खोपड़ी के शीर्ष पर सक्रिय होता है।"

—ब्रह्मोपनिषद

सर्वव्यापी आत्मा की पहचान मनुष्य में आत्मा या स्वयं के रूप में की जाती है। तो, जिसने स्वयं को जाना था, उसके बारे में कहा जाता है कि वह सर्वव्यापी आत्मा यानी ईश्वर को भी जानता है। पूर्वगामी उपनिषद उद्धरण बताता है कि कैसे भगवान अपने विभिन्न सचेत स्तरों में एक इंसान में खुद को प्रकट करते हैं।

हालाँकि यह उद्धरण ज्ञान के मार्ग के लिए है, लेकिन यह भक्ति मार्ग के लिए भी अच्छा है। ये सचेत स्तर सभी के लिए सामान्य हैं। प्रकाश, ध्वनि, वायु, जल और पदार्थ इस भौतिक ब्रह्मांड को भरते हैं। ईश्वर जो हर चीज का मूल है, इस भौतिक ब्रह्मांड का भी मूल है। सृष्टि में प्रकाश ही सब कुछ का स्रोत है। प्रकाश से ही ध्वनि और अन्य सभी तत्व उत्पन्न हुए हैं। भगवान को प्रकाश के रूप में पूजा जाता है। प्रकाश तत्व के बिना मंदिर की पूजा नहीं होती। प्रकाश स्रोत के अभाव में कोई अनुष्ठान नहीं होता है। मानव शरीर में, यह आंख है जो प्रकाश की जड़ और साधन के रूप में खड़ी है। नेत्र ईश्वर की व्यापकता और व्यापकता को प्रदर्शित करने का प्रयास करता है। एक सेकंड में उसे ऐसे तारे दिखाई देते हैं जो अरबों मील दूर हैं। अगले सेकंड में उसे कोई दूसरी वस्तु दिखाई देती है जो उसकी भौतिक उपस्थिति से एक फुट की दूरी पर है। शरीर में कोई भी ऐसा अंग

नहीं है जो आंख जितना तेज और सटीक हो। (मन और भी तेज है, लेकिन यह पदार्थ की बात नहीं है) जाग्रत अवस्था में जीव को अपने होने का अनुभव मुख्यतः आँखों के प्रयोग से होता है। इसीलिए कहा जाता है कि आत्मा या देवत्व जाग्रत अवस्था में स्वयं को आँखों से अभिव्यक्त करता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि दिव्यता अंधों में या किसी अन्य अंग के माध्यम से व्यक्त नहीं की जाती है। जो लोग सच्चे होते हैं वे किसी न किसी रूप में देवत्व को महसूस करते हैं।

थिरुवादी दीक्षै नाम का एक योग है, जो स्वयं को महसूस करने के लिए प्रकाश (आँखों) के तत्व का उपयोग करता है। योग के अन्य प्रकार भी हैं, जिनके प्रयोग से व्यक्ति बोध प्राप्त कर सकता है। सूरत शब्द योग है, जो ध्वनि कंपन के माध्यम से देवत्व को महसूस करने का प्रयास करता है। क्रिया योग है जो सूक्ष्म प्राणिक (वायु से संबंधित) आंदोलनों के अभ्यास के माध्यम से सामान्य चेतना को दिव्य चेतना से जोड़ता है। ध्यान अभ्यास (बिंदु विसार चक्र से संबंधित) हैं जो अमृत (जल तत्व से संबंधित) के रूप में जानी जाने वाली सूक्ष्म ग्रंथियों को नियंत्रित और निर्देशित करके सर्वोच्च चेतना प्राप्त करते हैं। हठ योग है, जो इस स्थूल शरीर, यानी पदार्थ का उपयोग आंतरिक और बाहरी शरीर को तैयार करने के लिए करता है ताकि भीतर देवत्व को महसूस किया जा सके।

ये योगाभ्यास बहुत सूक्ष्म हैं और एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। सामान्यतया, ये विधियां ज्ञान के मार्ग से संबंधित हैं।

भक्ति के मार्ग में भी, प्रकाश के तत्वों (तिरुवन्नामलाई ज्योति के रूप में आरती और ज्योति दर्शनम), ध्वनि (जपम), जल (कुम्बमेला में तीर्थदानम) और पदार्थ (अर्चवतार मूरथम - मूर्तियों) का उपयोग किया जाता है। तो, सभी आंतरिक

अंगों और प्रकृति के प्रमुख तत्वों का उपयोग आध्यात्मिक प्रथाओं में शुद्ध मन प्राप्त करने के लिए किया जाता है। वे साधक को पदार्थ की चेतना से परे जाने और आत्मा यानी आत्मा की शांतिपूर्ण और आनंदमय स्थिति को महसूस करने में मदद करते हैं. स्वयं या ईश्वर को पदार्थ से भिन्न कहा गया है। फिर अध्यात्म में पदार्थ कैसे सहायक हो सकता है?

स्वयं या ईश्वर भौतिक पदार्थ से असंबंधित नहीं है। मामला स्वयं या ईश्वर के भावों (शायद सबसे नीचे-सबसे नीचे) में से एक है। ईश्वर या स्वयं सभी समावेशी हैं। उससे दूर कुछ नहीं रहता। अंतर केवल जीव की दृष्टि में है। प्रह्लाद ब्रह्मांड के हर परमाणु में भगवान को देखने में सक्षम थे, जबकि उनके पिता ने हर जगह केवल स्थूल सामग्री देखी थी। तो, प्रह्लाद की याचना पर, भगवान एक स्तंभ से बाहर निकले। यह पुराण बताता है कि ईश्वर ब्रह्मांड के हर कण में निहित है। इतिहास में ऐसी घटनाएं भी शामिल हैं जो ईश्वर की समग्रता या सभी व्यापकता को दर्शाती हैं।

जब आकांक्षी आंतरिक तत्वों (जैसे ज्ञान के मार्ग में) और ब्रह्मांड के पांच तत्वों (भक्ति के मार्ग में) का उपयोग सत्य को चखने के लक्ष्य के साथ करता है, तो आत्म / ईश्वर की प्राप्ति होती है। इन दोनों रास्तों का लक्ष्य एक ही है; यह सत्य का बोध है। जब सत्य के लिए लक्ष्य और उसके बाद के कार्यों को निर्धारित किया जाता है, तो इंद्रियां नियंत्रण में रहती हैं; प्रकृति मित्रवत और बाध्य हो जाती है; स्वयं या ईश्वर प्राप्ति का स्वाद चखा जाता है।

यह कुछ भी हो - जाग्रत अवस्था, स्वप्न अवस्था, गहरी शयन अवस्था या सुप्त समाधि - यह मन यंत्र है जो सूक्ष्म रूप से स्वयं या ईश्वर का अनुभव करता है।

हम विभिन्न साधनाओं (जैसे राज योग, ज्ञान योग, कर्म योग और भक्ति योग) के माध्यम से जाग्रत अवस्था में मन को 'ठीक धुन' या 'नियंत्रित' कर सकते हैं। मन को ठीक किए बिना, चेतना की किसी भी अवस्था में उच्च आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करना कठिन है।

तनु मन अपने ही प्रयासों से (जैसे दूसरे काँटे से काँटा निकालना) स्वयं को शुद्ध करता है और साधन के रूप में अपनी पहचान खो देता है; यह अपने स्रोत, स्वयं या ईश्वर के साथ एक हो जाता है। हालांकि यह एक वाक्य में कहा गया है, इस प्रक्रिया में एक सामान्य व्यक्ति को कई हजार जीवन लग सकते हैं।

जिन लोगों ने अपने मन को शुद्ध और सुव्यवस्थित कर लिया है, उन्हें अपने और हर जगह फैली विशाल दिव्यता के बीच कोई अंतर नहीं दिखाई देगा। चूंकि खाली बर्तन के अंदर के स्थान और उसके बाहर के स्थान में कोई अंतर नहीं है, वे सर्वव्यापी भगवान के साथ एक हो जाते हैं। वे चेतना के परिवर्तन (जैसे जाग्रत अवस्था, स्वप्न अवस्था, शयन अवस्था और समाधि अवस्था) से प्रभावित या प्रभावित नहीं होते हैं। केवल पोट प्रभावित होता है, उसके अंदर का स्थान नहीं। जब तक वे पात्र (अर्थात् शरीर) के अंदर रहते हैं, वे जीवन मुक्त के रूप में रहते हैं। जब बर्तन टूट जाता है, तो वे विदेह मुक्त हो जाते हैं।

जीवन मुक्त कभी-कभी स्वेच्छा से और सीधे प्राकृतिक तत्वों में जहाजों को भंग कर देते हैं। उदाहरण के लिए: श्री रामलिंग स्वामीगल ने शरीर को प्रकाश में भंग कर दिया। एक नाथ महाराज ने अपने शरीर को गोदावरी नदी में विसर्जित कर दिया। पट्टीनाथर ने अपने शरीर को तिरुवोट्टियूर की मिट्टी में मिला दिया।

साधारण प्राणी भी, अचेतन लोग, पांच प्राकृतिक तत्वों में से किसी एक के लिए भौतिक शरीर खो देते हैं। आम लोगों के खोए हुए शरीर बदबूदार क्षय के अधीन हैं। तथाकथित मौत बल्कि जबरदस्ती होती है, वे वास्तव में तैयार नहीं होते हैं और अपने सचेत स्तरों में होने वाले परिवर्तनों और घटनाओं से अनजान होते हैं। वे इधर-उधर तब तक डगमगाते रहते हैं जब तक कि वे किसी अन्य शरीर (यह मानव शरीर हो भी सकता है और नहीं भी) में फंस जाते हैं, अपनी चेतना की गहराई में अतीत की सभी स्मृति छापों को खो देते हैं - ये सब उनकी समझ, जागरूकता और वरीयताओं के बिना होता है; ये चीजें उनके पिछले कर्म के आधार पर, महा माया की योजना के अनुसार होती हैं। वे माया के चंगुल से तब तक दूर नहीं जाते जब तक उन्हें एहसास नहीं हो जाता कि वे वास्तव में कौन हैं। यह साक्षात् प्राणियों के लिए मामला नहीं है। वे माया, प्रकृति के चंगुल से दूर हैं; माया पर उनका मित्रवत अधिकार है। वे जानते हैं कि वे पहले कहाँ थे - पृथ्वी पर अपनी भूमिका निभाने के बाद वे कहाँ होंगे। साकार प्राणी जगत के मंच पर स्थायी कर्ता नहीं हैं। वे भ्रमित अभिनेताओं के निर्देशक हैं जो अपनी भूमिकाओं और अपने वास्तविक स्वरूप से अनजान हैं; कभी-कभी वे (साक्षात्कार प्राणी) अतिथि भूमिका निभाते हैं और दुखी जीवों की मदद करने के लिए विश्व मंच पर दिखाई देते हैं। ऐसे मुक्तों के भौतिक शरीरों में जीवित रहने के दौरान भी किसी को भी उनके सामान्य सांसारिक जीवन के निशान नहीं मिले।

वे हर समय ईश्वर की चेतना में स्थिर रहते हैं; वे किसी भी पहचान से दूर होते हैं जो आमतौर पर दूसरों को बांधती है - जैसे कि वे जिस प्रकार के शरीर में रहते हैं, लिंग, आयु, जीवन शैली आदि के संबंध में। इस तरह की प्राप्ति का मौका केवल मनुष्यों के लिए ही संभव है। मानव जन्म कितनी अनमोल चीज है; केवल यहीं पर ईश्वर या स्वयं को महसूस करने का अवसर दिया जाता है।

इस विषय को अपने लिए पढ़ने के बाद, मैंने इस अध्याय को हटाने का विचार किया। मुझे लगा कि मैं उन क्षेत्रों पर बहुत ज्यादा बात कर रहा हूँ जिनमें मेरे पास पर्याप्त अनुभव नहीं है। यह बात मैंने अपनी मां से कही। उसने मुझे यह कहते हुए इस अध्याय को यथावत रखने की सलाह दी, “हो सकता है कि आपके पास अनुभव आधारित ज्ञान न हो; लेकिन तुमने जो लिखा था वह सच है। यह मत सोचो कि तुम यह लिख रहे हो। ईश्वर आपके माध्यम से मनुष्यों को बताना चाहता है कि वे कितने धन्य हैं कि उन्हें मानवीय चेहरा दिया गया। रहने दो, उन लोगों की मदद करने के लिए जिनके लिए यह है।”

मंदिरों

यहां, मुझे मंदिरों के बारे में और बताने की जरूरत है। मंदिर के माहौल में ही मुझे संदेश, संदेश के सुराग और संदेश का सार मिला। जाहिर है, इसने मुझे मंदिरों पर अधिक अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया।

आम तौर पर, धार्मिक स्थान भगवान में किसी की आस्था और भक्ति को जीवंत करते हैं। इसके अलावा, मंदिर व्यक्ति की वास्तविक पहचान - आत्मा या आत्मा को जीवंत करते हैं। मंदिर मानव और भगवान के बीच सीधा संबंध प्रदर्शित करते हैं। आगम शास्त्रों के अनुसार बनाए गए मंदिर सत्य बताते हैं कि ईश्वर सभी प्राणियों में है। मंदिर मानव शरीर के चयापचय से मिलते जुलते हैं। प्रहार या मंदिरों की बाहरी दीवारें स्वयं के आवरण की ओर इशारा करती हैं। आगम शास्त्र (मंदिर निर्माण के लिए शास्त्र) के अनुसार, अधिकतम सात प्रहर हो सकते हैं (संदर्भ: वैष्णव आगम का वैखम्स)। यह उन सात शरीरों का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रत्येक के पास होते हैं - भौतिक, ईथर, मानसिक, वैज्ञानिक या तार्किक, सूक्ष्म, अहंकारी और आनंदमय शरीर। ये शरीर उन सात सूक्ष्म केंद्रों से संबंधित हैं जो हर इंसान के पास होते हैं। उदाहरण के लिए, मूलाधार चक्र किसी के भौतिक शरीर से संबंधित है। सात चक्रों और शरीरों का अध्ययन एक अलग, विशाल विषय है। ये चक्र और शरीर मंदिर में व्याप्त सूक्ष्म देवत्व के संपर्क में आते हैं।

राजा गोपुरम या विमानम या प्रवेश द्वार पर स्थित मीनार को सूक्ष्म देवत्व का पैर कहा जाता है - मुकुट मूलाग्रह या मंदिर का मुख्य स्थान है जहाँ आत्मा या भगवान निवास करते हैं। मंदिरों की मीनारें भगवान के नाटकों को प्रदर्शित

करती हैं। वे कला और सौंदर्य के धनी हैं। मूर्तियां भगवान के खेल में विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित करती हैं जैसे कि सृजन, संरक्षण, विनाश, छिपाना और अनुग्रह प्रदान करना। मूलाग्रह के सामने खड़ा कोडीमाराम या लकड़ी का खंभा हमारे शरीर की सूक्ष्म रीढ़ की ओर इशारा करता है। महत्वपूर्ण अवसरों पर इस पोल के माध्यम से झंडा ऊंचा किया जाता है। यह हमारी रीढ़ की हड्डी में सूक्ष्म नसों के माध्यम से हमारी कुंडलिनी दिव्य ऊर्जा को ऊपर उठाने जैसा दिखता है। कोडीमाराम के सामने बाली पीतम खड़ा है। बाली पीठ वह जगह है जहां व्यक्ति अपने अच्छे और बुरे कर्मों के सभी फलों का त्याग करता है। यह प्रतीकात्मक रूप से इस तथ्य को प्रकट करता है कि ऐसा बलिदान किसी की दिव्य ऊर्जा को उसकी रीढ़ की हड्डी के शीर्ष तक - मस्तिष्क की महारत के माध्यम से माथे के केंद्र तक ऊपर उठाने के माध्यम से ही हो सकता है। मूलाग्रह में आत्मा या ईश्वर इन सबका साक्षी मात्र है। अंदर देवता की संरचना गहरे दार्शनिक अर्थों को प्रकट करती है। हालांकि, यह मंदिर का उद्देश्य है, देवता अबाधित प्रतीत होते हैं। यह इस तथ्य को प्रकट करता है कि स्वयं या ईश्वर हर समय तटस्थ है, हालांकि यह सृष्टि का मूल कारण है। इस सामान्य प्रवृत्ति से छूट के रूप में, कभी-कभी देवता कुछ चमत्कारों का प्रदर्शन करके इसके अस्तित्व का प्रमाण दिखाते हैं। यह और कुछ नहीं बल्कि ईश्वर की शक्ति है।

कई मंदिरों में बाहरी दीवारों की संख्या कम है। यहाँ केवल सूक्ष्म शरीरों का ही ध्यान रखा जाता है। आगम के अनुसार सभी मंदिर इस तथ्य को प्रकट करते हैं कि ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति में आत्मा के रूप में निवास करता है। यह जटिल लग सकता है। लेकिन आगमास का इरादा सभी व्यक्तियों को मंदिर संरचनाओं और समारोहों के माध्यम से व्यावहारिक रूप से उनकी ईश्वरीयता की याद दिलाना है। मंदिरों की रचना और व्यक्तिगत और अवैयक्तिक रूप से की जाने वाली

भक्ति गतिविधियाँ किसी की बुद्धि और भक्ति के माध्यम से उसके शरीर को शुद्ध करने के लिए होती हैं। मंदिर संरचना का अध्ययन फिर से एक विशाल विषय है; हमारे पास लगभग २०० आगम हैं जो शैवम, वैष्णवम और शक्तियम के संबंध में विभिन्न प्रकार की मंदिर संरचनाओं में काम करते हैं।

कुछ मंदिरों में पशु बलि जैसी कुछ विवादास्पद गतिविधियाँ की जाती हैं। वास्तव में, पशु बलि की प्रथा कई धर्मों में अलग-अलग अनुपात में मौजूद है। मातघ, जैसा कि ज्ञात है, अर्मेनियाई चर्च में पशु बलि की एक आम प्रथा है। माना जाता है कि यह परंपरा पूर्व-ईसाई मूर्तिपूजक अनुष्ठानों से उपजी है। अमीर मुसलमान ईद उल-अधा (बलिदान का त्योहार) के दौरान एक बड़े स्तनपायी की बलि देते हैं, जो हज (मक्का की तीर्थयात्रा) की अवधि के दौरान आता है। हिंदू धर्म में, इस तरह की प्रथाएं ज्यादातर सक्थेयम या स्थानीय आदिवासी परंपराओं से जुड़ी होती हैं। मध्ययुगीन काल में उभरा शास्त्रीय हिंदू धर्म अहिंसा (अहिंसा) के सिद्धांत के आधार पर पशु बलि, और यहां तक कि किसी भी मांस प्रसंस्करण पर जोर देता है। आधुनिक हिंदुओं के विशाल बहुमत के लिए पशु बलि की प्रथा दुर्लभ और अरुचिकर है। मैं भी उनके साथ खड़ा हूं। बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिक्किम जैसे अन्य धर्म, जिनकी जड़ें भारत में हैं, पूरी तरह से इन जानवरों की हत्या के खिलाफ हैं।

मंदिर अपने आध्यात्मिक क्षेत्र के अलावा कई भूमिकाएँ निभाते हैं। मंदिर सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक केंद्र हैं। मैं यहां केवल उनकी मुख्य भूमिका के बारे में बात कर रहा हूं।

इस मुख्य भूमिका के बारे में लोग कहां तक जानते हैं यह एक प्रश्नचिह्न है।

यह स्वामी शिवानंद सरस्वती की शिक्षाओं से है: “आगम ईश्वरीय पूजा के धार्मिक ग्रंथ और व्यावहारिक नियमावली हैं। इनमें तंत्र, मंत्र और यंत्र शामिल हैं। ये ग्रंथ ईश्वर की बाह्य उपासना की व्याख्या करते हैं। सभी सत्तर आगम (स्वामीजी सबसे प्रमाणित आगमों की बात कर रहे हैं) में (i) ज्ञान , (ii) योग या एकाग्रता, (iii) क्रिया और (iv) चर्या या करना शामिल हैं। वे आँन्कोलॉजी, ब्रह्मांड विज्ञान, मुक्ति, भक्ति, ध्यान, मंत्रों के दर्शन, रहस्यवादी आरेख, आकर्षण और मंत्र, मंदिर-निर्माण, छवि-निर्माण, घरेलू अनुष्ठानों, सामाजिक नियमों और सार्वजनिक त्योहारों के बारे में विस्तृत विवरण देते हैं। ”

आगम ने भक्ति और ज्ञान के सही मिश्रण के साथ मंदिर की पूजा की। वे कलात्मक और समान रूप से वैज्ञानिक हैं। यद्यपि मंदिर की पूजा द्वैतवादी दृष्टिकोण का समर्थन करती प्रतीत होती है, यह निराकार की ओर ले जाती है। यहां तक कि श्री आदि शंकराचार्य जैसे अद्वैतिक संत भी मंदिर पूजा का समर्थन करते हैं। भक्ति का उच्चतम अंत यह हो सकता है कि भक्त निरपेक्ष में विलीन हो जाए। यह अद्वैत की ओर ले जाता है। अंडाल नचियार, थिरु ज्ञान संबंध और मानिका वासागर इस तथ्य को अपने इतिहास के माध्यम से बताते हैं। उन सभी ने अपने शरीर को उन मंदिरों में विसर्जित कर दिया जिनकी वे पूजा करते थे। प्रपत्रों ने उन्हें निराकार की ओर ले जाया। यह केवल संरचनाएं और प्रतीक नहीं हैं जो इस अहसास को लाते हैं। यह भक्तों की भक्ति, उत्साह और ज्ञान है जो साकार करता है। मंदिर उन प्रमुख स्रोतों में से एक हैं जो इस भक्ति और ज्ञान का आह्वान करते हैं। यद्यपि मंदिर पूजा को अध्यात्म का प्रारंभिक शिक्षक कहा जाता है; यह मुक्ति तक और उसके बाद भी साथ दे सकता है। इसलिए श्री आदि शंकराचार्य, श्री रामानुजाचार्य, श्री रामकृष्ण परमहंस और कई नयनमारों जैसे सिद्ध संतों ने भी अपने भौतिक अस्तित्व के

अंत तक मंदिरों की पूजा की। हालांकि मंदिरों को ज्ञान और भक्ति का आह्वान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, मंदिरों का भक्ति पहलू आम जनता के बीच अधिक प्रमुख है। भक्ति से मेरा तात्पर्य ईश्वर और ईश्वर के प्रति भक्ति है। यह सत्य की तीव्र प्यास है। ईश्वर से कोई कम की प्रार्थना करे तो वह है तनु भक्ति।

आम लोगों ने केवल भक्ति को पतला किया है, क्योंकि वे सात पतले शरीरों में फंस गए हैं। अगर वे मंदिरों या अन्य धार्मिक स्थलों की सच्चाई से पूजा करते हैं, तो वे भी अपने शरीर को शुद्ध कर सकते हैं और घर वापस आ सकते हैं। इसलिए मंदिरों का आयोजन किया जाता है। लेकिन व्यावहारिक रूप से, ज्यादातर लोग केवल पारंपरिक अनुष्ठानों को आँख बंद करके करते हैं, वह भी भौतिक कारणों से - वे मुख्य उद्देश्य से अनजान हैं। 1 प्रतिशत से भी कम लोग केवल ईश्वर प्राप्ति की तलाश करते हैं और मंदिरों की पूजा सही तरीके से करने की कोशिश करते हैं।

ईश्वर प्राप्ति के प्रति प्रतीकात्मक दृष्टिकोण सभी धर्मों में अपरिहार्य है। ईश्वर पर एकाग्र होने के लिए जगह होनी चाहिए। अंदर पत्थर की मूर्ति हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती है; कुछ के बजाय लकड़ी का क्रॉस है; कुछ में श्रद्धेय आत्माओं के चित्र या साक्षात् प्राणियों की पुस्तकें हैं। कुछ के 'मंदिर' में कुछ नहीं हो सकता।

जो लोग अन्य धर्मों के प्रतीकों में दोष पाते हैं, वे भी मानते हैं कि वे किसी विशेष स्थान पर, किसी विशेष दिशा में, किसी विशेष समय या दिन में और विशेष

कार्यों (आध्यात्मिक आकांक्षाओं) के प्रदर्शन के माध्यम से देवत्व को अधिक महसूस कर सकते हैं। यह प्रतीकात्मक पूजा के अलावा और कुछ नहीं है।

इसका मतलब यह नहीं है कि सभी लोग भगवान को केवल कुछ धार्मिक स्थानों जैसे मंदिरों में ही पा सकते हैं। भगवान हर जगह है। जिन्हें बाहरी मदद की जरूरत नहीं है, वे अभी भी भगवान की पूजा कर सकते हैं। लेकिन, जो लोग ईश्वर को आंतरिक रूप से देखते हैं, उन्हें उन लोगों की आलोचना नहीं करनी चाहिए जो बाहरी माध्यमों से ईश्वर को खोजने का प्रयास करते हैं। तथ्य यह है कि लगभग सभी लोग अपने जीवन के किसी न किसी हिस्से में पूजा के किसी न किसी प्रकार के बाहरी साधनों पर निर्भर रहते हैं। इसके अलावा, ये धार्मिक स्थान दिव्य प्राणियों की आध्यात्मिक ऊर्जा से संतृप्त हैं और दिव्य स्पंदन उत्पन्न करते हैं जो किसी के आंतरिक स्व को छूते हैं।

समाचार 'ईश्वर हमारे देश में है' दोनों तरह से है। यह वही व्यक्ति कह सकता है जो भीतर ईश्वर को देखता है। यह उस देश में भी कहा जा सकता है जहां शांति, प्रेम और खुशी होती है। ये तभी प्रबल होंगे जब भूमि में ईश्वर साक्षात् प्राणी हों। भारत में निहित ऋषि दुनिया को साहसपूर्वक यह कहते रहे हैं: "आप भगवान हैं। आप सभी समावेशी हैं। अपने आप को गुरु की कृपा और अपनी साधना (स्वयं प्रयास) के माध्यम से जानो। तुम मनुष्य सब सुखों का खज़ाना भीतर रख रहे हो और बाहर भीख माँग रहे हो। आत्मा के अलावा किसी भी दुनिया में जानने के लिए और कुछ नहीं है।"

यद्यपि ईश्वर 'हमारी भूमि' में है जो हमारे अस्तित्व के भीतर है, हम उसके बारे में आसान दृष्टि प्राप्त करने में सक्षम नहीं हैं। इसका कारण यह है कि हमारी

चेतना लगातार बाहरी मामलों की ओर खींची जाती है। इसलिए मंदिर की कविता ने हमें 'अपराधी इंद्रियों' को जीतने के लिए कहा। अगर हम ऐसा कर सकते हैं, तो हम भी अपने देश में भगवान को महसूस कर सकते हैं। मेरा काम इस खबर को फैलाना है कि ईश्वर हमारी भूमि में है जिसका वास्तव में अर्थ है कि ईश्वर हमारे भीतर है। यहाँ योगानन्दजी के कथन को उद्धृत करना उचित है:

"आत्म-साक्षात्कार यह जानना है - शरीर, मन और आत्मा में - कि हम ईश्वर की सर्वव्यापकता के साथ हैं; हमें यह प्रार्थना करने की ज़रूरत नहीं है कि यह हमारे पास आए, कि हम हर समय न केवल इसके पास हैं, बल्कि यह कि भगवान का सर्वव्यापकता ही हमारी सर्वव्यापकता है; कि हम अभी भी उसके उतने ही अंश हैं जितने कि हम कभी होंगे। हमें बस इतना करना है कि अपने ज्ञान में सुधार करना है।"

धर्मों का उद्देश्य

रामकृष्ण परमहंस उन लोगों के लिए एक कहानी कहते हैं जो ईश्वर की परिभाषा देने की कोशिश करते हैं। चार अंधों ने एक हाथी की संरचना को परिभाषित करने की कोशिश की। पहले वाले ने उसके पैर को छुआ और इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि हाथी एक स्तंभ की तरह दिखेगा। दूसरे ने उसकी पूंछ को छुआ और कहा कि हाथी एक रस्सी जैसा पदार्थ है। तीसरे ने अपने दाँत को छूने पर यह निष्कर्ष निकाला कि हाथी एक लचीली रस्सी है। चौथे ने उसके बड़े पेट को छुआ, उसने अपने सभी दोस्तों की खोजों को अस्वीकार कर दिया। उसने कहा: "बेवकूफ, हाथी एक बड़ा बर्तन है"।

यह उन लोगों के लिए समान है जो ईश्वर को परिभाषित करने का प्रयास करते हैं। क्योंकि ईश्वर परिभाषा का विषय नहीं है, ईश्वर अनुभूति का विषय है। हालांकि अंधे सच हो सकते हैं, वे वास्तव में अनंत का केवल एक हिस्सा देख रहे हैं। तो, अनंत के लिए एक सीमित परिभाषा देने की कोशिश करना मूर्खतापूर्ण बात है। यह अंधे की तरह है जो किसी वस्तु को परिभाषित करने की कोशिश कर रहा है। ईश्वर को देखने के लिए हमें धारणा की आंखों की जरूरत है। जिन लोगों ने उन्हें पाया, वे महसूस करेंगे कि वे 'वही हाथी' के अलावा और कोई नहीं हैं जिसे वे परिभाषित करने और उन तक पहुंचने की कोशिश कर रहे थे। ईश्वर हमारे अपने देश में है, बस हम में से प्रत्येक में।

आत्म-साक्षात्कार वास्तव में ईश्वर-प्राप्ति है। सथ गुरु आदि शंकराचार्य कहते हैं कि "आत्मा में ईश्वर के समान गुण हैं। दो नहीं, बल्कि एक है। आत्मा की प्राप्ति

के बिना ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती है। यदि किसी ने स्वयं को पाया है, तो इसका मतलब है कि उसने पाया है भगवान भी।"

हम परिमित भूमि की सीमाओं में बहुत सावधान रहते हैं, लेकिन अंदर की भूमि की रक्षा करने में विफल रहते हैं। हम शत्रुओं - काम, अहंकार, ईर्ष्या - को अपनी भूमि के मंदिर पर कब्जा करने और बाहर से लड़ने के लिए जाने देते हैं। केवल जब हम आंतरिक शत्रुओं का सामना उसी क्रोध और वीरता से करते हैं जो हम अपनी भौतिक भूमि की रक्षा के लिए करते हैं, तभी हमें पता चलेगा कि ईश्वर अंदर है। आंतरिक शत्रुओं को भगाने का प्रयास करते समय हमें दूसरों की सीमाओं की उपेक्षा और चोट नहीं करनी चाहिए। वह सबके दिल में है। वह हर जगह बस है। बाहरी वातावरण और आंतरिक वातावरण दोनों ही ईश्वर का प्रदर्शन और प्रतिनिधित्व करते हैं।

स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि दुनिया और हम एक दूसरे से अलग नहीं हैं और जो ब्रह्मांड और स्वयं के बीच थोड़ा भी अंतर पाते हैं, वे नरक भोगते हैं। आगे बढ़ो। आप उसे वैसे भी पाएंगे। लेकिन रास्ते में किसी को मत मारो। ऐसा स्वामी विवेकानंद कहते हैं।

'एक को नीचे गिराने' का अर्थ है किसी को चोट पहुँचाना - न केवल शारीरिक और मानसिक स्तर पर, बल्कि इसका तात्पर्य किसी की आध्यात्मिक स्वतंत्रता पर हमले से भी है। दूसरों के आध्यात्मिक विश्वास में बाधा न डालें।

श्री आदि शंकराचार्य के अनुसार, तीन चीजें प्राप्त करना कठिन है।

१. मानव जन्म,

२. प्राप्ति की इच्छा और

३. सद्गुरु (सत्य को जानने वाले आध्यात्मिक गुरु) का मार्गदर्शन किसी की प्राप्ति में मदद करने के लिए।

जिन मनुष्यों ने दूसरी बहुमूल्य वस्तु भी प्राप्त कर ली थी, वह है प्राप्ति की इच्छा, उन्हें अपने आध्यात्मिक गुरु को देखने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ सकता है। हमारे पास ऐसे कुछ गुरु और उनके अमूल्य मार्गदर्शन हैं। कहा जाता है कि सतगुरु कोई और नहीं बल्कि खुद भगवान हैं। तो, दो सतगुरु नहीं हो सकते। यहां एक ही समाचार विभिन्न भाषाओं में हो सकता है।

शब्दांश भिन्न हो सकते हैं, स्वर भिन्न हो सकते हैं, वाक्यों की संरचना भिन्न हो सकती है। लेकिन ये सब जो संदेश देने की कोशिश कर रहे हैं, वह वही है। सच्चे गुरु सभी के लिए समान होते हैं और वह हमारी विवेक और तर्क शक्ति के रूप में हमारे भीतर ही होते हैं। वह अपनी आत्मा के सभी भूमी को साफ करता है और अपने भीतर प्रेम और ज्ञान की आंखें खोलता है। किसी की क्षमता और मानक के अनुसार, वह कोई भी मानक मार्ग निर्धारित करता है। तीन बाधाओं को दूर करने के लिए सभी रास्ते यहां हैं: भ्रम का प्रभाव, किसी के अतीत और वर्तमान कार्यों का प्रभाव और दुलमुल मन। इच्छा की गहराई और भगवान पर उनके द्वारा किए गए प्रयासों की मात्रा के अनुसार आकांक्षी जो चेतना प्राप्त करते हैं, वह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होती है। एक को लगता है कि वह भगवान की भूमि (सलोकम) में रहता है। व्यक्ति को लगता है कि वह ईश्वर की भूमि और उसकी उपस्थिति (समीबम) में रहता है। दूसरों को लगता है कि वह भगवान की भूमि में भगवान (सरूपम) के समान गुणों के साथ रहता है। फिर भी दूसरे को लगता है कि वह भगवान की भूमि में स्वयं भगवान (सयूज्यम) के रूप में है। इस प्रकार, हम सब परमेश्वर की भूमि में रहते हैं; हम

इस प्रकार भी कह सकते हैं, जैसे परमेश्वर हमारे देश में है। हम उसे कितना जानते हैं यह हमारे अपने हित और प्रयासों पर छोड़ दिया गया है। जो गंभीर हैं, वे उसके करीब आते हैं और जीवन के रहस्य को जीत लेते हैं। जिन्हें दिलचस्पी नहीं है, वे अज्ञान के अंधेरे में बुलबुले बनकर आते हैं और चले जाते हैं। वे भी प्रकाश में निहित हैं; लेकिन अज्ञानता के कारण वे इससे बहुत दूर हैं।

अद्वैत दर्शन कहता है कि भूमि और भगवान, दुनिया और उसके निर्माता दो अलग-अलग संस्थाएं नहीं हैं - दो नहीं हैं; एक ही चीज है और एक चीज है ईश्वर। सभी एक हैं और प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वयं के स्वभाव के बारे में इस मूल सत्य को जानने के लिए संघर्ष करता है। हम सभी अपने बेस से बहुत दूर फंसे हुए हैं और इस कमी को पूरा करना चाहते हैं।

ईश्वर सब में है। हालांकि वे कई रूपों में हैं, वे एक हैं और हर जगह बस हैं। फिर भी, हम सभी ईश्वर से 'अलग' महसूस करते हैं। अपने और ईश्वर के बीच तथाकथित 'अंतराल' को कैसे भरें? इसलिए हमारे पास धर्म हैं! धर्म मनुष्य और ईश्वर के बीच लापता संबंध स्थापित करता है। कुछ धर्म इसे ईश्वर के प्रति समर्पण कहते हैं, कुछ धर्म इसे सर्वशक्तिमान से प्रेम करना कहते हैं, कुछ धर्म इसे अव्यक्त निरपेक्ष के साथ विलय के रूप में संदर्भित करते हैं। कुछ धर्म ईश्वर के बारे में बात नहीं करते - अंतिम लक्ष्य, लेकिन मार्ग के बारे में बात करते हैं। मेरा धर्म ईश्वर के साथ विलय पर जोर देता है - ईश्वर होना और बनना। मैं यहां अपने धर्म के बारे में थोड़ा बता दूँ। इसके चार मानक मार्ग हैं: एक कार्यकर्ता के लिए - जो काम करना चाहता है और परिणामों की परवाह नहीं करता है, दूसरा भावनात्मक प्रकृति के लिए - जो हर चीज से प्यार करता है और परिभाषाओं और दर्शन के बारे में परेशान नहीं है, तीसरा दार्शनिक के लिए है

और दूसरा रहस्यवादी के लिए है जो पशु और मानव प्रवृत्ति को नियंत्रित करता है और दिव्य चेतना पर ध्यान केंद्रित करता है। लेकिन अंतिम मंजिल वही है और वो बस हमारे अंदर ही छुपा है या यूँ कहें कि हम उससे खुद को छुपा रहे हैं! हमें हमारा वास्तविक स्वरूप कौन दिखा सकता है? खुद भगवान। वह एक सत गुरु (आत्मा को जानने वाले आध्यात्मिक गुरु) के रूप में आते हैं और हमारे वास्तविक स्वरूप को जानने में हमारी मदद करते हैं।

एक धर्म के लिए बहुत ही बुनियादी आवश्यकता यह है कि उसके गठन के अलावा कम से कम एक आत्म-साक्षात्कार या ईश्वर का एहसास होना चाहिए। नहीं तो इसका अंत निश्चित रूप से होगा। उदाहरण, अकबर की तीन इलाही। राजा अकबर शायद लोगों के बीच सद्भाव लाना चाहते थे; लेकिन वह एक आत्म-साक्षात्कार नहीं है, इसलिए उसके दर्शन उसके जीवन के बाद भी जीवित नहीं रहे।

कोई भी सच्चा धर्म उपरोक्त में से किसी भी पथ में व्यवहार करेगा। और सामान्य कारक वे हैं जो पहले ही देख चुके थे, "अपराधी इंद्रियों को जीतना - शरीर और मन की चेतना से परे जाना"। इसे स्थिर अवस्था में रखने के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। यह शारीरिक रूप से इंद्रियों के दरवाजे बंद नहीं कर रहा है। शरीर और मन की चेतना के बिना - कोई भी अच्छे कारण के लिए अपने पूरे दिल और शक्ति के साथ कार्य कर सकता है। हमें यह महसूस करने का प्रयास करना चाहिए कि हम शरीर और मन से अधिक हैं। यह तभी हो सकता है जब मन शुद्ध हो।

तमिल में एक गीत 'मनमधु सेम्मयानल...' शब्दों से शुरू होता है यह प्रकट करता है कि यदि किसी का मन शुद्ध है, तो दैवीय छंदों का जाप करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि मन शुद्ध हो तो प्राणशक्ति को ऊपर उठाने की कोई आवश्यकता नहीं है। मन की शुद्धि के बाद किसी क्रिया की आवश्यकता नहीं है। इसका एक रिफ्लेक्टिव अर्थ भी है - शायद यह व्याख्या का सही तरीका हो सकता है। मन के शुद्ध होने तक दिव्य श्लोकों का जाप करें। अपनी जीवन शक्ति को तब तक ऊपर उठाएं जब तक आपका मन शुद्ध न हो जाए। जब तक मन शुद्ध न हो जाए, तब तक निःस्वार्थ कर्म करते रहें। किसी न किसी तरह से प्रयास करते रहें और अपने दिमाग को पूर्ण करने का प्रयास करें। इस आध्यात्मिक अभीप्सा को साधना के नाम से जाना जाता है। बर्तन के किनारे तक तेल डालते रहना है। एक बार जब बर्तन भर जाता है और ओवरफ्लो हो जाता है, तो और तेल डालने की आवश्यकता नहीं होती है। यह पर्याप्त है अगर हम जांच लें कि भरा हुआ बर्तन भरा हुआ है। लेकिन, बर्तन किसी जादू से नहीं भरेगा। हर एक को अपने प्रयास से अपना बर्तन भरवाना है। संसार के सभी सिद्ध पुरुषों ने अनेक जन्मों में यह भरण-पोषण किया है।

साधारण लोग अपने बर्तनों में कई छेद लेकर आते हैं - काम, लोभ, उदासीनता और इस तरह की चीजें। इसलिए, वे कितना भी भरने की कोशिश करें, उनके प्रयास किसी भी छेद से निकल जाते हैं और बर्तन को खाली रखते हैं। लेकिन, अगर वे ईमानदारी और विश्वास के साथ जारी रखते हैं, तो भगवान उन्हें अपने छेदों को भरने और परिपूर्ण और पूर्ण रहने में मदद करते हैं।

इसे दूसरे तरीके से भी कहा जा सकता है। अपनी आध्यात्मिक साधना के माध्यम से बर्तन को खाली करें। बर्तन सभी कूड़ा-करकट से भर गया है। कोई

बहुत कोशिश कर सकता है, फिर भी, काम और लालच जैसी धूल बर्तन में आती रहती है। इन धूलों को पूरी तरह से हटाने के लिए ईमानदारी से प्रयास और सबसे बढ़कर भगवान की कृपा की आवश्यकता है। केवल परमेश्वर की कृपा से ही मनुष्य परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकता है। और भगवान उनकी मदद करते हैं जो अपनी मदद खुद करते हैं। जो हाथ ऊपर उठाता है उसे ईश्वर अपनी ओर खींचता है। इस प्रकार, धर्म का मुख्य लक्ष्य शुद्ध मन की उपलब्धि के माध्यम से ईश्वर की कृपा पाने के लिए साधना करना है, ताकि व्यक्ति अपने स्वयं के अस्तित्व में सत्य के प्रकाश को देख सके। यही जीवन का मूल उद्देश्य है।

मन की शुद्धि विभिन्न तरीकों से होती है। कोई कार्य करने में लिप्त हो सकता है; कोई कार्रवाई करने से रोक सकता है; कोई भक्ति के साथ प्रार्थना कर सकता है; योगाभ्यास और ध्यान के द्वारा इन्द्रियों को वश में किया जा सकता है। उद्देश्य एक ही है - मन को शुद्ध करो। जब हमारा चित्त निर्मल होता है और जब हम बाह्य विषयों पर अपना ध्यान केंद्रित करना बंद कर देते हैं, तब आत्मा का दर्शन होता है। हम सभी को एक निश्चित निश्चित मार्ग पर चलने के लिए बाध्य नहीं कर सकते, क्योंकि हमारे अस्तित्व की प्रकृति स्वतंत्रता पर आधारित है। हमें अपने तरीके और जरूरतें चुनने की आजादी दी गई है। हमें केवल यह जांचना है कि कहीं हम गलत कदम तो नहीं उठा रहे हैं। मुझे लगता है कि यहां मार्टिन लूथर किंग के शब्दों को उद्धृत करना उचित है। "अगर आप उड़ नहीं सकते तो दौड़ो, अगर आप दौड़ नहीं सकते तो चलो, अगर आप चल नहीं सकते तो रेंगें, लेकिन जो कुछ भी आप करते हैं, आपको आगे बढ़ते रहना है।" आगे बढ़ना - यहाँ आत्म-साक्षात्कार में प्रगति को दर्शाता है।

धर्मों के अनुयायी आपस में टकराते हैं और कहते हैं कि वे अकेले ही सही हैं। धर्म व्यक्तिगत प्रकृति का होता है। यह व्यक्तियों को अपने दिमाग के लिए स्वयं सफाई करने का विकल्प देता है। किसी के धर्म की गिनती में कुछ संख्या जोड़ने में अपना कीमती समय बर्बाद करने के बजाय, उसमें रहने के योग्य होने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। सबसे अधिक आबादी वाले धर्मों की सभाओं में भाग लेने मात्र से कोई पूर्णता नहीं मिल जाएगी; केवल दैवीय धर्मग्रंथों को पढ़ने से एक मोक्ष नहीं मिलेगा, जब तक कि कोई व्यक्ति जो कुछ भी सीखता है उस पर काम करने के लिए 'उपभोग' और 'आगे नहीं आता'।

अगर कोई वास्तव में बदलना चाहता है, तो उसे दी गई कुंजी को लागू करना होगा। कुंजी यानि धर्म या मार्ग व्यक्तिगत है। कुंजी की प्रशंसा करना या कुंजी पर बहस करना मदद नहीं करेगा। कुंजी के सही प्रयोग से व्यक्ति स्वयं को अनलॉक कर सकता है और चेतना के नए आयामों तक जा सकता है। अगर वह चाबी नहीं लगाता है या अगर वह अपनी अज्ञानता और जिद से चाबी को नुकसान पहुंचाता है, तो समस्या खुद के साथ है - चाबी के साथ नहीं। उसी प्रकार यदि कोई स्वयं को बदलने के लिए तैयार नहीं है, तो वह धर्म को कोसता है और चाबियां बदलता रहता है। भगवान हर किसी को सही कुंजी के साथ भेजता है जो एक को बेहतर लगता है। हमें दी गई उपयुक्त चाबियों के साथ हमें अपने भाग्य और बोध को अपने लिए तैयार करना होगा। जब तक कोई आत्मसाक्षात्कार की इच्छा न करे और अपने आप को उस पर ईमानदारी से लगाने के लिए तैयार न हो, कोई भी धर्म उसकी मदद नहीं कर सकता। केवल कुंजियाँ (धर्म) बदलने से किसी को तब तक मदद नहीं मिलेगी जब तक कि कोई स्वयं या ईश्वर प्राप्ति के पहलू में स्वयं के प्रति सच्चा नहीं रहता। यदि कोई स्वयं के प्रति सच्चा नहीं है - स्वयं को बेहतरी के लिए बदलने के लिए तैयार नहीं

है - तो, केवल धर्म परिवर्तन का कोई फायदा नहीं है। यदि किसी धर्म को अपना मानने मात्र से ही एक बोध हो सकता है, तो वहां के सभी लोगों को साक्षात् प्राणी होना चाहिए।

लेकिन सच तो यह है कि सभी धर्मों में अपराधी होते हैं। तो, असली परीक्षा धर्म के साथ नहीं है, बल्कि ईमानदारी और संघर्ष के साथ है जो किसी की प्राप्ति के लिए दिखाता है। प्रत्येक धर्म में कुछ अनूठी विशेषताएं होती हैं जो कुछ बेहतर होती हैं। हो सकता है कि यह सभी लोगों को उसी तरह सूट न करे जिस तरह से यह उन लोगों के लिए उपयुक्त है जिनके लिए यह बनाया गया है। सभी धर्म हमें ईश्वर/आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाने के लिए यहां हैं। यदि कोई धर्म इस उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकता, तो वह धर्म ही नहीं है। भारत में विभिन्न व्यक्तित्वों के लिए बहुमुखी दर्शन और सिद्ध पथ वाले धर्म हैं और ईश्वर / आत्म-साक्षात्कार का एक ही लक्ष्य है।

जैसा कि स्वामी विवेकानंद कहते हैं, "धर्म बोध है; न बात, न सिद्धांत, न सिद्धांत, चाहे वे कितने ही सुंदर हों। यह होना और बनना है, न सुनना या स्वीकार करना; यह पूरी आत्मा है जो वह मानती है। धर्म है।"

उसे कैसे देखें?

वेदांत के अनुसार, दो 'आंखें' हैं जिनके माध्यम से कोई भगवान को देख सकता है। प्रेम का नेत्र (प्रेमचक्षु) और ज्ञान का नेत्र (ज्ञानचक्षु)। प्रेम की आंख स्वयं के ज्ञान को दर्शाती है। ज्ञान की आंख प्राकृतिक प्रेम से चमकती है। ईश्वर के प्रति प्रेम और स्वयं का अनुभव - ईश्वर को देखने के लिए इन आंखों की जरूरत है। तो, ब्रह्मनुभव उपनिषद कहते हैं,

‘उसे देखने के लिए ज्ञान की आंख या प्रेम की आंख की जरूरत है।’

ईश्वर से प्रेम करने का अर्थ है सभी प्राणियों से प्रेम करना, जैसे ईश्वर सभी प्राणियों में वास करता है। स्वयं के अनुभव का अर्थ है इस सत्य का अनुभव कि एक ही आत्मा या आत्मा सभी प्राणियों में निष्पक्ष रूप से निवास करती है।

ज्ञान का मार्ग और प्रेम का मार्ग - दोनों आंतरिक हैं। अगर ईश्वर हमारे भीतर है, तो हम मंदिर, चर्च, मस्जिद, गुरुद्वारों, धर्मशालाओं और अन्य सभी धार्मिक और आध्यात्मिक केंद्रों में क्यों जाएं? अगर अंदर कुछ गलत हो जाता है, तो शांति और आनंद की आत्मा प्रकृति की चिंताओं और भय की धुंध में धुंधली हो जाती है जो हमारी अपनी गलतियों के कारण होती है। ऐसे समय में, हमारे पास पवित्र स्थानों और प्राणियों के दर्शन करने जैसे बाहरी साधनों के माध्यम से शांति और पवित्रता प्राप्त करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है।

इन स्थानों में हमारे आंतरिक स्वयं को साफ करने की शक्ति है यदि हम सिर्फ जवाब दे सकते हैं और अपने दिल को ज्ञान और प्रेम की सुगंधित सुगंधित

बौछार के लिए खोल सकते हैं। हो सकता है कि हम अपेक्षा के अनुरूप प्रभाव का अनुभव न करें, क्योंकि प्रभाव अक्सर स्क्रीन के पीछे होता है। बाहरी मदद उन्हीं को मिल सकती है जो भीतर से जागे हुए हैं। यह श्री ललिता सहस्रनामम् का एक श्लोक है: "अंतर्मुका समाराथ्यः बहिरमुका सुदुर्लभा" जिसका अर्थ है 'ईश्वर को आंतरिक माध्यमों से खोजा जाता है; बाहरी साधन मुश्किल से मदद करते हैं'।

ऐसा लगता है कि एक परस्पर विरोधी दृष्टिकोण है - 'बाहरी साधन शायद ही मदद करते हैं'। जो लोग आध्यात्मिक रूप से अंधे हैं, उनके लिए बाहरी साधन किसी काम के नहीं हैं। वे बाहर से कुछ भी नहीं देखते क्योंकि उनके अंदर 'प्रकाश' नहीं है। प्रबुद्ध को बाहरी मदद की जरूरत नहीं है। जो भीतर से प्रकाशित हैं, वे हर जगह एक ही प्रकाश देखते हैं; जो नहीं हैं, उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता, भले ही भगवान उनके सामने खड़े हों। इसलिए, हम पूजा के बाहरी साधनों के संबंध में विभिन्न प्रकार के अनुभव और मत देखते हैं। 'अंधे' को कुछ दिखाई नहीं देता; जिनकी रोशनी कम है, उसी के अनुसार देखते हैं; जो सूर्य के समान प्रकाशित हैं, वे सब कुछ देखते हैं। इसलिए गांधीजी ने कहा, "भगवान को अपने प्रकाश के अनुसार देखता है।" इसलिए हमें अपनी आंतरिक दृष्टि को हर तरह से विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। बाहरी पूजा आंतरिक रूप से 'यह' पर विचार करने के लिए 'साधन' प्रस्तुत करती है। यदि साधक पूजा के बाहरी साधनों के अनुभव को आंतरिक संकायों में नहीं बदलता है, तो बाहरी पूजा में कोई फायदा नहीं है।

इस पुस्तक के पहले पन्ने पर एक चित्र जिसमें तिरुवन्नामलाई और एक योगी की छवि है, साथ ही नीचे दो दीप रखे हुए हैं। यह चित्र क्या दर्शाता है:

तिरुवन्नामलाई के शीर्ष में प्रज्वलित प्रकाश योगी में दिखाई देने वाली रोशनी में वास्तविक अर्थ प्राप्त करता है। अंदर के प्रकाश के बिना बाहर के प्रकाश की वास्तविकता का निरीक्षण नहीं किया जा सकता है। इस आंतरिक प्रकाश को देखने के लिए, ज्ञान (बुद्धि) या/और प्रेम की आंख (प्रेम) की आंख की आवश्यकता होती है।

"शरीर को ही भगवान का मंदिर कहा जाता है। निवास करने वाला जीव (आत्मा) ही अतुलनीय शिव (भगवान) है। निर्मल्य (बेकार अज्ञान) को दूर भगाओ और सोहम (मैं तुम हूँ) के साथ प्रार्थना करो"

- मिथेयी उपनिषद्

भगवान हमारे देश में हैं - यह संदेश सभी की जन्मजात ईश्वरीयता पर जोर देता है। इस देवभूमि में प्रवेश करने के लिए शुद्ध मन होना चाहिए जिसके आधार पर ज्ञान और प्रेम के नेत्र विकसित हों।

अब, मैं देख सकता था कि ये अक्सर गलत व्याख्या किए गए शब्द - प्रेम, बुद्धि, धर्म और ईश्वर - एक आम आदमी की ताकत और अस्तित्व से कितनी बारीकी से संबंधित हैं।

वेब साइट (putli.org) इस खबर को फैलाने के लिए डिज़ाइन की गई है कि 'भगवान हमारी भूमि में हैं'। इस सच्चाई को फैलाने के लिए कि मनुष्य प्रकृति में दिव्य हैं। पूर्वाग्रहों की इस दुनिया में, मुझे आशा है कि ये पृष्ठ दर्शकों को उनकी स्वयं की अनसुलझी आंतरिक खोज की याद दिलाएंगे। यह खबर कि ईश्वर हम में से हर एक के अंदर है, सुगंध की तरह धीरे से फैल जाएगा।

समाचार को बाहरी रूप से संप्रेषित करना पड़ता है ताकि जो ग्रहणशील हैं वे इसे आंतरिक रूप से सुनने का प्रयास कर सकें। मैं सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करता हूँ कि दोनों तरीकों से प्रसार को प्रभावित करें।

भारत और संदेश

यद्यपि हमने अपनी भूमि - भारत के संदर्भ के बिना 'समाचार' (भगवान हमारी भूमि में है) देखा था, इसका मतलब यह नहीं है कि संदेश का भारत के लिए कोई प्रासंगिकता नहीं है। जैसा कि श्री परमहंस योगानन्दजी अपनी 'योगी की आत्मकथा' में कहते हैं, "यद्यपि भारत की सभ्यता किसी भी अन्य देश की तुलना में अधिक प्राचीन है, कुछ इतिहासकारों ने उल्लेख किया है कि उसके जीवित रहने की उपलब्धि कोई दुर्घटना नहीं है, बल्कि एक तार्किक घटना है। भारत ने हर पीढ़ी में अपने सर्वश्रेष्ठ पुरुषों के माध्यम से जो शाश्वत सत्य की पेशकश की है, उसके प्रति समर्पण के रिकॉर्ड में। अस्तित्व की सरासर निरंतरता से, युगों से पहले की अकर्मकता से (क्या धूल के विद्वान वास्तव में हमें बता सकते हैं कि कितने?), भारत ने समय की चुनौती के लिए किसी भी व्यक्ति का सबसे योग्य उत्तर दिया है। ”

"इब्राहीम की प्रभु से प्रार्थना की बाइबिल कहानी कि सदोम शहर को बखशा जाए यदि उसमें दस धर्मी पुरुष पाए गए, और ईश्वरीय उत्तर:" मैं इसे दस के लिए नष्ट नहीं करूंगा, "भारत के पलायन के प्रकाश में नया अर्थ प्राप्त करता है गुमनामी से। युद्ध की कला में कुशल शक्तिशाली राष्ट्रों के साम्राज्य चले गए, जो कभी भारत के समकालीन थे: प्राचीन मिस्र, बेबीलोनिया, ग्रीस, रोम।"

"भगवान का उत्तर स्पष्ट रूप से दिखाता है कि एक भूमि भौतिक उपलब्धियों में नहीं, बल्कि पुरुषों की अपनी उत्कृष्ट कृतियों में रहती है। ... कोई भी राष्ट्र जो दस पुरुषों को पैदा कर सकता है जो कि असंवैधानिक न्यायाधीश की दृष्टि में महान हैं, विलुप्त होने को जानेंगे।"

"ऐसे अनुनय-विनय को मानकर भारत ने समय की हज़ारों चालों के विरुद्ध स्वयं को बुद्धिहीन नहीं सिद्ध किया है। हर सदी में आत्मज्ञानी गुरुओं ने उसकी धरती को पवित्र किया है।"

हमारी भूमि में ईश्वर का संदेश वास्तव में भारत के लिए एक विशेष महत्व रखता है, वह भूमि जहां प्रेम और ज्ञान के दिव्य प्राणी या तो शारीरिक रूप से या अन्यथा हर समय ब्रह्मांड के अन्य सभी प्राणियों को एक ईश्वर के चरणों में मार्गदर्शन करने के लिए रहते हैं। साधारण लोग भी उनके प्रेम और ज्ञान की किरणों से मार्गदर्शित होते हैं। इस आम आदमी का काम ऊपर की सच्चाई की स्वीकृति है। जिसने ईश्वर को पाया वह स्वयं ईश्वर है। वास्तव में, यह कहना सही है कि 'ईश्वर हमारी भूमि में है', क्योंकि भारत में विभिन्न रंगों के दिव्य धब्बे हैं, जो ईश्वर-प्राप्त आत्माओं की उपस्थिति और आशीर्वाद को अंकुरित करते हैं - संपूर्ण मानव जाति और अन्य प्राणियों को असीम महासागर में मार्गदर्शन और संतुलित करने के लिए। समय और स्थान का।

दुनिया की कुछ प्रसिद्ध हस्तियों की बातें निम्नलिखित हैं:

"अगर मुझसे पूछा जाए कि किस आकाश के नीचे मानव मन ने अपने कुछ चुनिंदा उपहारों को पूरी तरह से विकसित किया है, जीवन की सबसे बड़ी समस्याओं पर सबसे अधिक गहराई से विचार किया है, और समाधान ढूंढ लिया है, तो मुझे भारत की ओर इशारा करना चाहिए।"

- मैक्स मुलर (जर्मन विद्वान, १८२३-१९००)

"धर्म की दृष्टि से भारत ही करोड़पति है...एक ऐसी भूमि जिसे सभी मनुष्य देखना चाहते हैं, और एक बार देख लेने पर, एक झलक से भी, बाकी सभी शो के लिए वह झलक नहीं देगा। ग्लोब संयुक्त।"

- मार्क ट्वेन (अमेरिकी लेखक, १८३५-१९१०)

"यह पहले से ही स्पष्ट हो रहा है कि एक अध्याय जिसकी पश्चिमी शुरुआत थी, उसका एक भारतीय अंत होना चाहिए, अगर इसे मानव जाति के आत्म-विनाश में समाप्त नहीं होना है। इतिहास के इस सबसे खतरनाक क्षण में, मुक्ति का एकमात्र तरीका है। मानव जाति के लिए भारतीय तरीका है।"

- डॉ अर्नोल्ड टॉयनबी (ब्रिटिश इतिहासकार, १८८९-१९७५)

"यदि इस पृथ्वी के मुख पर कोई ऐसी जगह है जहाँ मनुष्य के अस्तित्व का सपना शुरू होने के शुरुआती दिनों से ही जीवित मनुष्यों के सभी सपनों को एक घर मिला है, तो वह भारत है।"

- रोमेन रोलेंड (फ्रांसीसी दार्शनिक, १८८६-१९९४)

"भारत में, मुझे पृथ्वी पर रहने वाले नश्वर लोगों की एक जाति मिली, लेकिन इसका पालन नहीं किया, शहरों में निवास किया, लेकिन उनके लिए स्थिर नहीं, सब कुछ रखने के लिए, लेकिन कुछ भी नहीं था।"

- अपोलोनियस टायनायस (यूनानी यात्री, पहली शताब्दी सीई)

“चीजों की शुरुआत में भारत ने पूरी दुनिया की शुरुआत की थी। उसके पास पहली सभ्यता थी; उसके पास भौतिक संपदा का पहला संचय था; वह गहन विचारकों और सूक्ष्म बुद्धि से भरी हुई थी; उसके पास खदानें, जंगल थे,

और एक फलदायी आत्मा थी... जहाँ तक मैं न्याय करने में सक्षम हूँ, भारत को सबसे असाधारण देश बनाने के लिए मनुष्य या प्रकृति द्वारा कुछ भी नहीं छोड़ा गया है, जहाँ तक सूर्य अपने चक्कर लगाता है। ऐसा लगता है कि कुछ भी नहीं भुला दिया गया है, कुछ भी अनदेखा नहीं किया गया है।"

- मार्क ट्वेन

"इस सदी के अंत में, दुनिया पर पश्चिम का प्रभुत्व होगा, लेकिन २१वीं सदी में "भारत अपने विजेताओं पर विजय प्राप्त करेगा।"

- डॉ. अर्नोल्ड जे. टॉयनबी (ब्रिटिश इतिहासकार)

भारत दुनिया को जीत लेगा - हथियारों से नहीं बल्कि प्यार और भाईचारे से। भारत यहां भौतिक दुनिया को जीतने के लिए नहीं है। भारत यहां हर किसी को यह सिखाने के लिए है कि खुद को कैसे जीतना है।

इस कार्य का उद्देश्य स्पष्ट है - सभी आत्माओं की ईश्वरीयता को याद दिलाना और यहां के प्राणियों को उनके अवसर और राष्ट्र की संप्रभु संस्कृति और सभी प्राणियों की भलाई के लिए सच्ची धार्मिक विचारधाराओं को पहचानने और फिर से जीवंत करने की जिम्मेदारी की याद दिलाना। इसका मतलब यह नहीं है कि भारत ही एकमात्र ऐसी भूमि है जहां कोई ईश्वर को पा सकता है। महान आत्माएं इस दुनिया के हर हिस्से में हैं। लेकिन, यहाँ भारत में, मानव जीवन का अल्टीमेटम पूरे देश में दैवीय स्पंदनों के प्रबल प्रभाव के माध्यम से इतना स्पष्ट और जीवंत है। हर कोई इसे किसी न किसी रूप में महसूस करता है। और ये दिव्य स्पंदन दुनिया भर में सभी मतभेदों से परे सभी के लिए हैं। क्या हमने दिए

गए अवसर को पहचाना है? क्या हम अवसर का उपयोग कर रहे हैं? किसी भी तरह से, इस काम में चीजों को बेहतर बनाने की प्रेरणा है।

मेरे सुझाव, स्पष्टीकरण, तर्क और आलोचक अलग-अलग शीर्षकों जैसे 'ए बॉन वॉयेज', 'थस स्पेक इंडिया' और 'ग्लिम्प्स ऑफ लाइट' के तहत अलग-अलग प्रकाशित होते हैं।

वे सभी सामान्य रूप से आध्यात्मिकता और विशेष रूप से भारत की जीवन शक्ति का समर्थन करते हैं - इन दोनों के बीच ज्यादा अंतर नहीं है। अध्यात्म भारत की जीवन शक्ति है।

वे व्यक्तियों, समाज और राजनीतिक दलों की भूमिकाओं के बारे में बात करते हैं। शासकों को राष्ट्र के शासन के अलावा मनोरंजन माध्यमों की जाँच, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने और सच्ची धर्मनिरपेक्षता लाने के तरीकों से हमारी संस्कृति की रक्षा के लिए भी आवश्यक कदम उठाने चाहिए। हमारी अच्छी पुरानी संस्कृति को जीवंत करने में समाज - शैक्षणिक संस्थान और मनोरंजन मीडिया - की प्रमुख भूमिका है। औद्योगिक प्रतिष्ठानों को पर्यावरण प्रदूषण और प्रकृति में असंतुलन पैदा किए बिना अपना व्यवसाय करना चाहिए। व्यक्तियों को अपने निजी जीवन में हमारी संस्कृति की उच्च नैतिकता का अभ्यास करने के लिए तैयार रहना चाहिए। यह शासकों का काम है कि उपरोक्त सभी को सकारात्मक (योग्य को सम्मान और पुरस्कार प्रदान करना, जिसे धना के रूप में जाना जाता है) और नकारात्मक (कानून तोड़ने वालों को दंडित करना, जिसे ढांडा के रूप में जाना जाता है) के माध्यम से निगरानी करना और प्रभावित करना है।

देशभक्ति केवल सुरक्षा या संकट के समय की बात नहीं है। यह राष्ट्र के गौरव के सभी मामलों - उसकी संस्कृति, धर्म और पवित्रता के संरक्षण में मौजूद होना चाहिए। सूखे अहंकारी उत्सवों में चुनिंदा दिनों में देशभक्ति व्यक्त नहीं होती है। यह रोजमर्रा की जिंदगी में उनके महत्वपूर्ण सिद्धांतों के पालन के माध्यम से अच्छी तरह से व्यक्त किया गया है। जहां तक भारत का संबंध है, उसका महत्वपूर्ण सिद्धांत 'आत्मा की स्वतंत्रता' है। एक आदर्श देशभक्त इसके लिए काम करता है। वह सत्य या स्वयं के लिए खड़ा है। वह उन सभी के खिलाफ खड़ा होता है जो सत्य या आत्मा को बांधते हैं।

थिरुचित्रम्बलम

(सर्वोच्च निवासी के चरण कमलों को नमस्कार)

